सामाजिक विज्ञान

उत्तर पुस्तिका

कक्षा

6

इतिहास

पाठ—1

पृथ्वी पर स्थानों की पहचान करना

NCERT प्रश्न

1. चित्र को आधार मानकर मापनी से दूरी का मापन (नर्मदा के मुहाने से गंगा के मुहाने तक) करने पर दूरी लगभग 8 सेमी. आती है।

प्रश्नानुसार 2.5 सेमी. प्रदर्शित करता है 500 किमी.

अत: 1 सेमी. प्रदर्शित करेगा = $\frac{500}{2.5}$ = 200 किमी.

अत: 8 सेमी. की रेखा प्रदर्शित करेगी = 8 × 200 = 1600 किमी.

अत: नर्मदा के मुहाने से गंगा के मुहाने तक की दूरी लगभग 1600 किमी. होगी।

2. विश्व में समय का निर्धारण ग्रीनविच रेखा से किया जाता है जो लन्दन से होकर गुजरती है। इसका देशान्तरीय मान 0° है। इस देशान्तर रेखा से पूर्व की ओर समय बढ़ता जाता है तथा एक देशान्तर पर 4 मिनट का अन्तर आता है। भारत की मानक समय रेखा 82° 30' को माना गया है।

इस प्रकार $82°\frac{1}{2} \times 4 = 330$ मिनट का अन्तर आ जाता है अर्थात् $\frac{330}{60} = 5.30$ घण्टे।

इसी कारण जब लन्दन में दोपहर के 12 बजते हैं तो भारत में सायं के 5.30 बज जाते हैं।

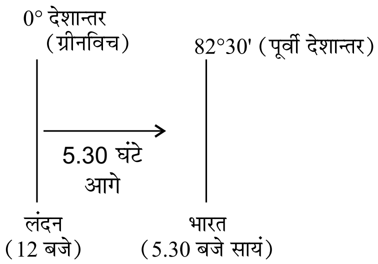

3. पृथ्वी पर सभी जगह एक समान धरातल या परिस्थितियाँ नहीं मिलती हैं। किसी भी मानचित्र पर वास्तविक आकार एवं प्रकार में विभिन्न आकृतियों जैसे—भवनों, सड़कों, पुलों, वृक्षों, कुएँ तथा रेल की पटरियों को दिखाना सम्भव नहीं होता है। इसलिए इन्हें प्रतीक चिह्नों व रंगों द्वारा दर्शाया जाता है। ये प्रतीक चिह्न व रंग कम स्थान में अधिक जानकारी प्रदान करते हैं। इन प्रतीकों व रंगों की सहायता से मानचित्र को आसानी से बनाया व जाना जा सकता है तथा इनका अध्ययन करना आसान होता है। यदि आप किसी क्षेत्र की भाषा को नहीं जानते हैं, बावजूद इसके आप प्रतीकों (चिह्नों) की सहायता से मानचित्र से दिशाओं के अलावा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा रंग आसानी से विविध भागों/सांस्कृतिक भूदृश्यों की जानकारी प्रदान कर सकते हैं। इसी कारण हमें मानचित्र में प्रतीक चिह्नों व रंगों की आवश्यकता होती है।

4. विद्यार्थी अपने शिक्षक व दिशा-निर्देश के अनुसार घर/विद्यालय से स्थानों की सूची बनाएँ—

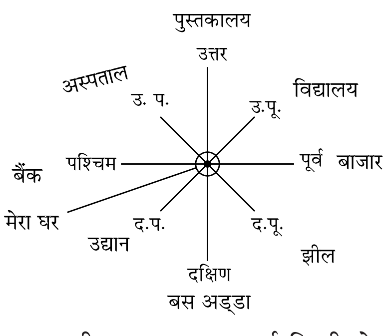

5. स्थानीय समय का तात्पर्य किसी क्षेत्र में सूर्य के आधार पर मिलने वाले समय से होता है जबकि मानक समय का सम्बन्ध समय कटिबन्धों से होता है। स्थानीय समय सूर्य की स्थिति के अनुसार निरन्तर बदलता रहता है जबकि मानक समय स्थिर रहता है। स्थानीय

समय के कारण प्रत्येक नगर या कस्बों का अपना अलग समय होता है जबकि मानक समय क्षेत्रों में एकरूपता स्थापित करता है। (अपने शिक्षक की सहायता से सभी विद्यार्थी भिन्न-भिन्न समूह बनायें व इस विषय पर चर्चा करें तथा निष्कर्षों को समूहवार लिखकर उनकी तुलना करने का कार्य करें।

6. दिल्ली और बेंगलुरु के अक्षांश भले ही क्रमश: 29° उ. व 13° उ. हैं किन्तु दोनों की स्थिति लगभग 77° पूर्वी देशान्तर है। अत: दोनों के स्थानीय समय में कोई अन्तर नहीं होगा।

7. **1.** गलत **2.** सही **3.** सही **4.** गलत **5.** सही **6.** सही।

8.

	बाएँ से दाएँ		ऊपर से नीचे
1.	SCALE	**2.**	Longitude
4.	Globe	**3.**	Coordinates
5.	Equator	**6.**	Grid
6.	Greenwich	**7.**	IST
8.	MAP	**9.**	Pole
10.	Latitude	**11.**	IDL

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – स, 2 – स, 3 – स, 4 – स, 5 – ब, 6 – स, 7 – अ, 8 – अ, 9 – अ, 10 – ब, 11 – ??, 12 – स, 13 – ब, 14 – ब, 15 – स।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – उत्तरी, दक्षिणी, 2 – प्रधान, 3 – विषुवत रेखा, 4 – ग्लोब, 5 – भौतिक।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – असत्य, 4 – सत्य, 5 – असत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – स, 2 – द, 3 – य, 4 – ब, 5 – अ

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (अ), 2 – (द)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – अ, 2 – द, 3 – स

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. अक्षांशों को मापने के लिए प्रारंभिक बिंदु भूमध्य रेखा या विषुवत रेखा है जो 0° अक्षांश पर स्थित है।
2. 0° देशांतर पर स्थित रेखा प्रधान मध्याह्न कहलाती है जो देशांतर मापने का प्रारंभिक बिंदु है।
3. पृथ्वी का 'ध्रुवीय अक्ष' एक काल्पनिक रेखा है जो उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों से होकर गुजरती है तथा जिसके चारों ओर पृथ्वी घूमती है।
4. अक्षांश समांतर होते हैं क्योंकि वे भूमध्य रेखा तथा एक-दूसरे के समांतर वृत्त रूप से बढ़ते हैं।
5. मानचित्रों के निम्न तीन प्रकार हैं —

   1. भौतिक मानचित्र, 2. राजनीतिक मानचित्र, 3. विषयक मानचित्र
6. पृथ्वी 24 घंटे में 360° घूमती है।
7. मानचित्र की मापनी (map-scale) वह अनुपात है जो यह बताता है कि मानचित्र की 1 इकाई दूरी यथार्थ में कितनी दूरी के बराबर है।
8. अक्षांश का उच्चतम मान 90° होता है जो 90° उत्तर अथवा 90° दक्षिण हो सकता है।
9. ग्लोब पृथ्वी का गोलाकार मॉडल होता है अथवा पृथ्वी का त्रिआयामी (3-D) चित्रण होता है।
10. निर्देशांकों में दो संख्याओं या एक अक्षर और एक संख्या का संयोजन होता है जिसका उपयोग किसी स्थान को ग्रिड पर सही प्रकार से चिह्नित करने के लिए किया जाता है।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. मानचित्र निम्न तीन प्रकार के होते हैं —

1. भौतिक मानचित्र — ये पहाड़, नदियों और अन्य प्राकृतिक विशेषताओं को दर्शाते हैं।

2. राजनीतिक मानचित्र — ये देश, राज्य और शहर जैसे प्रशासनिक स्थानों को दर्शाते हैं।

3. विषयक मानचित्र — ये जलवायु, जनसंख्या या अन्य विशिष्ट विषयों को दर्शाते हैं।

2. मानचित्र पर भवन, सड़कों, नदियों, पहाड़ों आदि को दर्शाने वाले संकेत प्रतीक चिह्न कहलाते हैं तथा ये भारतीय सर्वेक्षण विभाग (Survey of India) ने निर्धारित किए हैं।

3. निर्देशांकों में अक्षांश एवं देशांतरों के साथ-साथ दिशाओं (N,S,E,W) का समन्वय होता है जिससे किसी स्थान की सटीक स्थिति की पहचान की जा सकती है।

4. देशांतर रेखाऐं उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली काल्पनिक रेखाऐं हैं। ये रेखाऐं प्रधान मध्याह्न रेखा से किसी स्थान की कोणीय

दूरी को दर्शाती हैं तथा प्रधान मध्याह्न के पूर्व में स्थित पूर्वी देशांतर तथा पश्चिम में स्थित पश्चिमी देशांतर रेखाऐं कहलाती हैं।

5. निर्देशांक एक या एक से अधिक संख्याओं का समूह होता है जो किसी स्थान या बिन्दु की स्थिति को दर्शाता है। पृथ्वी पर स्थानों का पता लगाने के लिए निर्देशांक प्रणाली अक्षांश और देशांतर का उपयोग करती है।

6. किसी स्थान की जलवायु पर अक्षांश का गहरा प्रभाव पड़ता है। अक्षांश, किसी स्थान की भूमध्य रेखा से दूरी को उत्तर अथवा दक्षिण दिशा में दर्शाता है। जैसे-जैसे अक्षांश बढ़ते हैं, भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती है और तापमान कम होता जाता है।

7. अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा (IDL) एक काल्पनिक रेखा है जो प्रधान मध्याह्न रेखा के विपरीत 180° देशांतर पर स्थित है। जब कोई व्यक्ति इस रेखा को पूर्व से पश्चिम की ओर पार करता है तो उसकी तिथि एक दिन बढ़ जाती है अर्थात् सोमवार से मंगलवार हो जाता है और जब पश्चिम से पूर्व की ओर पार करता है तो एक दिन घट जाता है।

8. 0° देशांतर पर स्थित ग्रीन विच रेखा (प्रधान मध्याह्न) पर निर्धारित समय ग्रीनविच मानक समय कहलाता है जबकि 82°30' पूर्वी देशांतर पर भारतीय मानक समय निर्धारित है जो कि ग्रीनविच मानक समय से 5 घंटा 30 मिनट आगे रहता है। अर्थात् जब ग्रीनविच माध्य समय दोपहर का 12 बजे का हो तो भारतीय मानक समयानुसार शाम के 5 बजकर 30 मिनट हो रहे होते हैं।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. मानचित्र किसी क्षेत्र का एक चित्रात्मक रूप होता है जो उस क्षेत्र को ऊपर से देखना जैसे अनुभव प्रदान करता है। यह सामान्य तथा एक समतल सतह पर बनाया जाता है। यह किसी क्षेत्र का द्वि-आयामी (2-D) चित्रण प्रदान करता है। यह भौगोलिक विशेषताओं, स्थानों, सड़कों, नदियों, सीमाओं आदि का निरूपण करता है।

मानचित्र के घटक :

मानचित्र के मुख्य तीन घटक होते हैं —

1. दूरी — मानचित्र पर दूरी को पैमाने के माध्यम से दर्शाया जाता है वास्तविक दूरी और मानचित्र पर दर्शायी गयी दूरी के बीच एक निश्चित अनुपात होता है जिसे पैमाना कहते हैं।

2. दिशा — मानचित्र पर दिशाओं को दर्शाया जाता है जिसमें उत्तर दिशा ऊपर की तरफ होती है।

3. प्रतीक — मानचित्र पर विभिन्न वस्तुओं जैसे इमारतों, सड़कों, नदियों, पहाड़ों आदि को दर्शाने के लिए कुछ विशिष्ट और निश्चित प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है।

2. पृथ्वी का मानचित्र एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि मानचित्र एक द्विआयामी (2-D) समतल सतह पर बनाया जाता है जबकि पृथ्वी एक त्रिआयामी, (3-D) गोलाकार वस्तु है। इस कारण दूरियों, क्षेत्रों, आकृतियों एवं दिशाओं को चित्रित करने में कुछ न कुछ त्रुटि होना स्वाभाविक है। पृथ्वी के मानचित्र में आकार, क्षेत्रफल, दूरी एवं दिशाओं को एक साथ निरूपित किया जाता है जो एक जटिल कार्य है।

3. पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति निर्धारित करने में अक्षांश और देशांतर का बहुत महत्व है। अक्षांश यह निर्धारित करते हैं कि वह स्थान भूमध्य रेखा के उत्तर में है या दक्षिण में तथा देशांतर यह बताते हैं कि वह स्थान प्रधान मध्याह्न रेखा के पूर्व में है या पश्चिम में है। ये निर्देशांक एक ग्रिड प्रणाली बनाते हैं जिससे मानचित्र और जीपीएस सिस्टम में स्थानों को सटीकता से पहचानना सरल हो जाता है।

4. ग्रीन विच मध्याह्न पहले प्रधान मध्याह्न नहीं था। इससे बहुत समय पूर्व भारत का अपना प्रधान मध्याह्न था जिसे मध्यरेखा या केन्द्रीय रेखा कहा जाता था जो उज्जयिनी (वर्तमान 'उज्जैन') शहर से होकर गुजरती थी। यह शहर लगभग 1500 वर्ष पूर्व प्रसिद्ध खगोलशास्त्री 'वराहमिहिर' का कार्यस्थल एवं अन्वेषण स्थल था। इसी कारण इस स्थान से होकर प्रधान मध्याह्न निश्चित किया गया था।

5. पृथ्वी के किसी स्थान पर स्थानीय समय की गणना उस स्थान के देशांतर के अनुसार होती है। यदि स्थान प्रधान मध्याह्न से पूर्व की ओर है तो प्रधान मध्याह्न के समय में प्रत्येक 15° देशांतर के लिए एक घंटा के अनुपात से समय जोड़ दिया जाता है तथा यदि दिया गया स्थान प्रधान मध्याह्न से पश्चिम की ओर है तो प्रत्येक 15° देशांतर के लिए 1 घंटा के अनुपात से प्रधान मध्याह्न के समय में से घटा दिया जाता है। प्रत्येक 1° देशांतर के लिए समय का मान 4 मिनट होता है।

पाठ—2

महाद्वीप एवं महासागर

NCERT प्रश्न

1. **(क) महाद्वीप**—विशाल स्थलीय भू-भाग जो जल से घिरा रहता है महाद्वीप कहलाता है। यह एक बड़ा व सतत् भू-भाग होता है।

   (ख) महासागर—विशाल जलराशि वाले भाग ये पृथ्वी सतह पर सबसे बड़े जलनिकाय होते हैं।

   (ग) द्वीप—पानी से पूरी तरह घिरे छोटे स्थलीय भू-खण्डों को द्वीप कहा जाता है।
2. विद्यार्थी विश्व के महाद्वीपों का चित्र बनाकर उनमें रंग भरें व तुलना करें।
3. 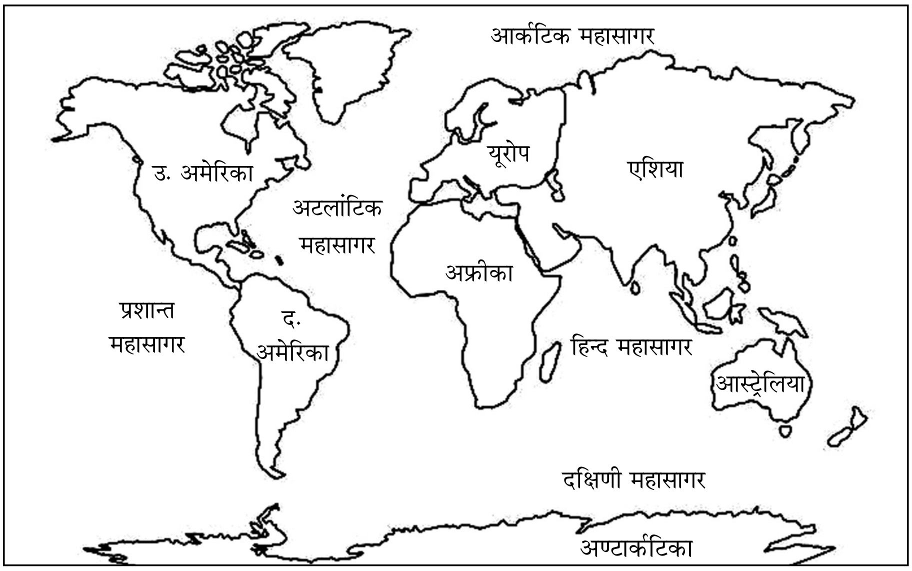

4.

				[1]O	X	Y	[2]G	E	N		
							R				
	[3]C	O	N	[4]T	I	N	E	N	T		
				S			E				
				U			N				
		[5]A		N			L				
	E	[6]U	R	A	S	I	A				
		S		M			N				
		T		I			D		[7]P		
		R							A		
[8]P	L	A	S	T	I	C			C		[9]I
		L							I		S
		I							F		L
		[10]A	N	T	A	R	C	T	I	C	A
									C		N
											D

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – ब, 2 – ब, 3 – स, 4 – ब, 5 – ब, 6 – स, 7 – ब, 8 – स, 9 – ब, 10 – ब, 11 – अ, 12 – स, 13 – ब, 14 – द, 15 – ब।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – नीलाग्रह, 2 – महाद्वीप, 3 – उत्तरी, 4 – भूकंप, 5 – पर्यावरण।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – असत्य, 4 – सत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – द, 2 – य, 3 – अ, 4 – ब, 5 – स

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (अ), 2 – (स)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – स, 2 – ब, 3 – स

G. अति लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. आर्कटिक महासागर पृथ्वी का सबसे छोटा महासागर है।

2. अंतरिक्ष से देखने पर पानी की अधिकता के कारण पृथ्वी नीले रंग की दिखाई देती है। इसीलिए पृथ्वी को नीला ग्रह कहते हैं।

3. पृथ्वी का 29% भाग भूमि द्वारा ढका हुआ है।

4. ग्रीनलैंड दुनियाँ का सबसे बड़ा द्वीप है।

5. दक्षिणी महासागर अंटार्कटिका को घेरता है।

6. अफ्रीका के पश्चिम में अटलांटिक महासागर स्थित है।

7. समुद्र का वह भाग जो तीन ओर से जमीन से घिरा हो अर्थात् जिसकी तट रेखा अंदर की तरफ मुड़ी हुई हो, खाड़ी कहलाता है। जैसे- बंगाल की खाड़ी आदि।

8. भारत के पूर्व में हिन्द महासागरीय भाग — बंगाल की खाड़ी स्थित है।

9. समुद्र के नीचे होने वाले भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट एवं भूस्खलन के कारण उठने वाली विशाल समुद्री लहरें सुनामी कहलाती हैं।

10. भारत द्वारा अंटार्कटिका में स्थापित वैज्ञानिक केन्द्र का नाम 'दक्षिण गंगोत्री' है।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. महासागरों से छोटे जलनिकाय होते हैं— समुद्र या सागर, खाड़ी, झील, नदी एवं तालाब।

2. पृथ्वी पर मीठा पानी ग्लेशियरों, नदियों, झीलों तथा भूजल के रूप में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त वायुमंडल एवं ध्रुवीय क्षेत्रों में भी मीठा पानी पाया जाता है।

3. यूरोप और एशिया महाद्वीप को संयुक्त रूप से यूरेशिया नाम से जाना जाता है। यह मुख्यत: उत्तरी एवं पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।

4. द्वीप वह छोटा भूभाग होता है जो चारों तरफ से पानी से घिरा होता है। यह महाद्वीप से छोटा होता है तथा यह महासागर, समुद्र, झील अथवा नदी के बीच स्थित हो सकता है। भारत के दो प्रमुख द्वीप समूह हैं — 1. अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, 2. लक्षद्वीप द्वीपसमूह।

5. महासागरों को ग्रह का फेंफड़ा कहा जाता है क्योंकि वे पृथ्वी के लिए ऑक्सीजन का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है क्योंकि उनमें पाए जाने वाले समुद्री पौधे दुनिया का आधे से अधिक ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं।

6. विश्व महासागर दिवस हर वर्ष 8 जून को मनाया जाता है जिसका उद्देश्य महासागरों के महत्व और उनके संरक्षण के बारे में लोगों को जागरूक करना है। इसके माध्यम से हम जानते हैं कि हमारी पृथ्वी के लिए महासागर कितने महत्त्वपूर्ण हैं।

7. मानव गतिविधियों के कारण समुद्री जीवन को अनेक खतरे पैदा हो रहे हैं, जैसे- समुद्र में कचरा डालने, अत्यधिक मछली पकड़ने, जलवायु परिवर्तन आदि से समुद्री पारिस्थितिक तंत्र बिगड़ रहा है।

8. पृथ्वी पर जल और थल के असमान वितरण के परिणामस्वरूप भौगोलिक विशेषताओं में भिन्नताऐं उत्पन्न होती हैं।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. पृथ्वी पर निम्न पाँच महासागर पाए जाते हैं—

1. प्रशांत महासागर, 2. अटलांटिक महासागर

3. हिंद महासागर, 4. दक्षिणी महासागर, 5. आर्कटिक महासागर।

इनमें अनेक समुद्री पौधे एवं जंतु पाए जाते हैं- समुद्री पौधों में छोटे शैवाल एवं समुद्री घास प्रमुख हैं, जबकि समुद्री जानवरों में रंग-बिरंगी मछलियाँ, डॉल्फिन, व्हेल आदि प्रमुख हैं।

2. महासागर केवल जीवनदायिनी वर्षा का ही स्रोत नहीं होते बल्कि ये शक्तिशाली प्राकृतिक आपदाओं का भी स्रोते होते हैं। चक्रवात आमतौर पर महासागरों के ऊपर कम दबाव के क्षेत्रों में बनते हैं तथा भारी बारिश और तेज हवाओं द्वारा तटीय क्षेत्रों में भयंकर तबाही मचाते हैं। इसी प्रकार गहरे समुद्र में भूकंप आने अथवा ज्वालामुखी फटने से विशाल लहरें (सुनामी) उत्पन्न होती हैं जो व्यापक जानमाल का नुकसान करती हैं।

3. विश्व में महाद्वीपों की गणना के विभिन्न प्रकार—

विभिन्न दृष्टिकोण के आधार पर विश्व में महाद्वीपों की संख्या भी भिन्न-भिन्न मानी गयी है जो इस प्रकार है -

1. चार महाद्वीप - (1) अफ्रीका-यूरेशिया, (2) अमेरिका, (3) अंटार्कटिका, (4) ऑस्ट्रेलिया।

2. पाँच महाद्वीप - (1) अफ्रीका, (2) यूरेशिया, (3) अमेरिका, (4) ऑस्ट्रेलिया, (5) अंटार्कटिका।

3. छः महाद्वीप - (1) अफ्रीका, (2) यूरेशिया, (3) उत्तरी अमेरिका, (4) दक्षिणी अमेरिका, (5) अंटार्कटिका, (6) ऑस्ट्रेलिया।

4. सात महाद्वीप - (1) अफ्रीका, (2) यूरोप, (3) एशिया, (4) उत्तरी अमेरिका, (5) दक्षिणी अमेरिका, (6) अंटार्कटिका, (7) ऑस्ट्रेलिया।

4. दक्षिण गंगोत्री— 'दक्षिण गंगोत्री' अंटार्कटिका में भारत का पहला वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र था

जिसे भारत ने सन् 1983 में स्थापित किया। यह भारतीय अंटार्कटिक कार्यक्रम का हिस्सा था। यह दक्षिणी ध्रुव से लगभग 2500 किमी दूर स्थित है। वर्तमान में इसका उपयोग एक आपूर्ति बेस और पारगमन शिविर के रूप में किया जा रहा है क्योंकि भारत के द्वारा दो और नये केन्द्र स्थापित कर दिए गए हैं।

इस केन्द्र का नामकरण गंगोत्री ग्लेशियर के नाम पर किया गया था। इसे 81 सदस्यीय भारतीय दल द्वारा लगभग 8 सप्ताह में तैयार किया गया तथा यह सौर ऊर्जा द्वारा संचालित एक मानव रहित केन्द्र था। 1990 में बर्फ में दब जाने के कारण इसे छोड़ दिया गया।

5. इतिहास में, महासागरों का मानवता पर गहरा प्रभाव रहा है। ये प्रवास, व्यापार और सैन्य गतिविधियों के लिए रास्ते के रूप में कार्य करते रहे हैं। विश्वभर में तटीय समुदाय के लोग महासागरों से प्रभावित हुए हैं और कई परंपराऐं और मिथ समुद्री देवताओं, राक्षसों, छिपे हुए खजानों आदि के रूप में महासागरों से जुड़े हुए हैं। इतिहास में समुद्री मार्ग खोजने के लिए अनेक नाविक लम्बी-लम्बी यात्राऐं करते रहे हैं। जिन देशों के समीप महासागर होता है, उन देशों में नौ सेनाऐं पूर्वकाल से ही रहती आई है।

J. मानचित्र कार्य —

महासागरों और महाद्वीपों को दर्शाने वाला विश्व का मानचित्र

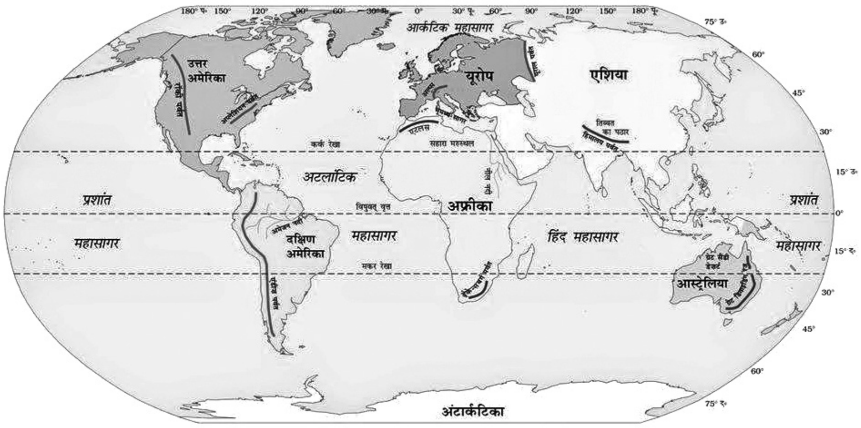

पाठ—3

स्थल रूप और जीवन

NCERT प्रश्न

1. मेरा कस्बा/नगर जयपुर मैदानी क्षेत्र में स्थित है। यहाँ समतल धरातल देखने को मिलता है। शहर के बाहरी भाग में अरावली की पहाड़ियाँ विद्यमान हैं। इसके साथ ही यहाँ द्रव्यवती, बाणगंगा, ढूँढ़ नदी का स्वरूप भी देखने को मिलता है। (विद्यार्थी अपने-अपने क्षेत्र के अनुसार उत्तर लिख सकते हैं।)

2. छोटा नागपुर से प्रयागराज होते हुए अल्मोड़ा की यात्रा के दौरान हमें पठारी स्थलरूप, मैदानी स्थलरूप व पर्वतीय स्थलरूप देखने को मिलते हैं।

3.

केदारनाथ/बद्रीनाथ/ गंगोत्री/यमुनोत्री	–	पर्वतीय स्थलरूप
वैष्णो देवी, नैनीताल	–	पर्वतीय स्थलरूप
प्रयागराज/ वाराणसी/ अयोध्या	–	मैदानी स्थलरूप
जगन्नाथपुरी/द्वारका	–	समुद्रतटीय स्थलरूप
जैसलमेर/जोधपुर	–	मरुस्थलीय स्थलरूप
उज्जैन/पारसनाथ	–	पठारी स्थलरूप

4. 1. गलत, 2. गलत, 3. सही, 4. गलत, 5. गलत, 6. सही, 7. सही, 8. सही, 9. गलत।

5.

एवरेस्ट गिरिश्रृंग	—	पर्वतारोहण
राफ्टिंग	—	नदी
ऊँट	—	मरुस्थल
तिब्बत का पठार	—	विश्व की छत
गंगा का मैदान	—	धान के खेत
जलमार्ग	—	गंगा
किलिमंजारो गिरिश्रृंग	—	अफ्रीका
यमुना	—	सहायक नदी

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – अ, 2 – ??, 3 – स, 4 – स, 5 – ब, 6 – ब, 7 – स, 8 – स, 9 – ??, 10 – स, 11 – स, 12 – अ, 13 – स, 14 – स, 15 – ब।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – माउंट एवरेस्ट, 2 – सीढ़ीदार (सोपानी), 3 – ढक्कन, 4 – गंगा का मैदान, 5 – थार।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – सत्य, 4 – सत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – य, 2 – द, 3 – ब, 4 – स, 5 – अ

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (अ), 2 – (ब)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – ब, 2 – चार, 3 – ब

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. आयु के आधार पर पहाड़ों के दो प्रमुख प्रकार हैं- 1. नवीन पर्वत, 2. पुराने पर्वत।
2. भारत में दक्कन पठार काली मिट्टी के लिए जाना जाता है।
3. पर्वतों की ढलानों पर पर्वतीय वन पाए जाते हैं।
4. माउंट एवरेस्ट दुनियाँ की सबसे ऊँची पर्वत चोटी है।
5. पृथ्वी की सतह पर पाई जाने वाली विभिन्न संरचनाऐं जैसे- पहाड़, घाटियाँ, मैदान, पठार, द्वीप, तटरेखा आदि भूआकृतियाँ कहलाती है।
6. केरल का अनामुडी पर्वत दक्षिण भारत का सबसे ऊँचा पर्वत है।
7. गंगोत्री ग्लेशियर के पास गौमुख (हिमालय) गंगा नदी का उद्‌गम स्थल है।
8. पहाड़ों की ढलानों पर सीढ़ियों की तरह समतल खेत बनाकर की जाने वाली खेती सोपानी कृषि कहलाती है।
9. नदियों द्वारा बहाकर लाई गयी मिट्‌टी के जमाव से बने मैदान जलोढ़ मैदान कहलाते हैं, जैसे- गंगा का मैदान।
10. बछेन्द्री पाल भारत की सबसे पहली महिला पर्वतारोही थी जिसने माउंट एवरेस्ट 1984 में फतेह किया।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. लाखों वर्षों से पृथ्वी की शक्तियों जैसे कि हवा, पानी, भूगर्भीय गतिविधियों और अपरदन से भू आकृतियाँ बनती हैं। पर्वत, पठार, समतल मैदान और घाटियाँ प्रमुख भू आकृतियाँ हैं।
2. पर्वतीय क्षेत्रों में सोपानी कृषि (टेरेस फार्मिंग) का बड़ा महत्व है। इससे मिट्‌टी का कटाव रूकता है, पानी का सरंक्षण होता है, पहाड़ों के कठिन जीवन के लिए अन्नोत्पादन होता है, अनेक लोगों को रोजगार मिलता है तथा यह पर्यावरण के लिए भी लाभदायक है।
3. भारतीय अर्थव्यवस्था और संस्कृति में गंगा नदी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इससे कृषि सिचाई होती है, जल विद्युत परियोजनाऐं संचालित होती है, परिवहन, नौकायन, पर्यटन एवं रोजगार में अहम भूमिका है। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति में गंगा को देवी एवं माँ का स्थान प्राप्त है तथा धार्मिक अनुष्ठानों में गंगा जल का उपयोग श्रेष्ठ माना जाता है।
4. पर्वतों पर पाए जाने वाले वन पर्वतीय वन कहलाते हैं। ऊँचाई के साथ तापमान में परिवर्तन होता है इसलिए इनमें अनेक प्रकार की वनस्पति और वन्यजीव पाए जाते हैं। इनकी जलवायु ठंडी एवं नम होती है स्थलाकृति ढलानयुक्त होती है शंकुधारी पेड़ पाए जाते हैं तेंदुआ, हिरण, भालू तथा विभिन्नप प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं।
5. नवीन पर्वत एवं पुराने पर्वत आयु के आधारपर नामित किए गये हैं। नवीन पर्वत कम समय पहले बने हैं, अधिक ऊँचे तथा नुकीली चोटियों वाले छोटे हैं, जैसे- हिमालय (भारत), रॉकी (उत्तरी अमेरिका), एंडीज (दक्षिणी अमेरिका) पुराने पर्वत अधिक समय पहले बने हैं, कम ऊँचे हैं, चोटियाँ गोल हैं तथा हल्की ढलानें हैं! जैसे- अरावली (भारत), यूराल (रूस)।

6. रेगिस्तान में रहने वाले लोगों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे- पानी की कमी, अत्यधिक तापमान, कम पेड़ पौधे, बहुत दूर-दूर आबादी, धूलभरी आँधियाँ, बिजली, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, सड़क आदि की कमी।
7. पठार खनिज समृद्ध होते हैं क्योंकि वे भूगर्भीय गतिविधियों, ज्वालामुखी विस्फोट या कटाव जैसी प्रक्रियाओं से निर्मित होते हैं जो भूगर्भीय खनिजों को ऊपर धरातल के समीप लाने में सहायक होती हैं।
8. मैदानों में जीवन को सहारा देने में नदियों का विशेष महत्व है इनसे पीने को पानी मिलता है। सिंचाई, परिवहन और विद्युत ऊर्जा का उत्पादन होता है तथा ये अपने साथ उपजाऊ मिट्टी भी लाती है। इसी कारण लोग नदियों की पूजा करते हैं।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. पर्वत निर्माण की प्रक्रिया में मुख्य रूप से तीन प्रकार की गतिविधियों का विशेष योगदान है।

1. पृथ्वी की टेक्टोनिक प्लेटों का आपस में टकराना जिसमें एक प्लेट नीचे धंसती है तो दूसरी ऊपरी की ओर पर्वत के रूप में उठती जाती है।

2. ज्वालामुखी विस्फोट से लावा और राख का एक विशाल ढेर पहाड़ के रूप में इकट्ठा हो जाता है जिससे ज्वालामुखी पर्वतों का निर्माण होता है।

3. हवा, पानी और बर्फ जैसे प्राकृतिक पदार्थ कटाव या अपरदन का कारण बनते हैं जिससे पहाड़ों की सतह समय के साथ बदल जाती है।

पर्वत निर्माण की प्रक्रिया बहुत धीमी गति से चलती है तथा किसी पर्वत के निर्माण में लाखों वर्ष लगते हैं।

2. पहाड़ों में रहने के फायदे और नुकसान दोनों होते हैं :

फायदे — प्राकृतिक सुंदरता और मनभावन दृश्य देखने को मिलते हैं, प्रदूषण नहीं होता तथा स्वच्छ हवा प्राप्त होती है, शांति वातावरण होता है तथा स्वास्थ्यवर्धक वातावरण होता है, मानसिक तनाव कम होता है।

नुकसान — पहाड़ों पर शिक्षा, चिकित्सा एवं रोजगार जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी होती है। मौसम अनिश्चित होता है, कभी भी वर्षा हो जाती है, यातायात के साधन भी सीमित होते हैं, सघन आबादी नहीं होती। अत: सामाजिक संपर्क भी कम होता है तथा जंगली जानवरों आदि का भय सतत बना रहता है।

3. पठार — पठार एक ऊँचा उठा हुआ सपार्ट भूभाग होता है जो अपने आसपास के क्षेत्रों से अधिक ऊँचाई युक्त होता है। इसे 'टेबललैंड' भी कहते हैं क्योंकि यह आसपास के नीचे समतल मैदान पर रखा एक टेबल जैसा प्रतीत होता है।

पठारों के लक्षण —

1. पठार अपने आस-पास के क्षेत्रों से ऊँचे होते हैं।

2. पठारों का शीर्ष पहाडों की तरह नुकीला नहीं होता बल्कि लगभग सपाट एवं चौड़ा होता है।

3. पठार के एक या एक से अधिक ओर खड़ी ढलान होती है।

4. पठार खनिज समृद्ध होते हैं तथा खनन व्यवसाय के महत्वपूर्ण स्थल हैं।

5. पठार के आसपास अक्सर गहरी नदी घाटियाँ पाई जाती हैं।

4. मैदान में रहने वाले लोगों का जीवन — भारत के मैदानी भागों में रहने वाले लोगों का जीवन, कृषि, शहरीकरण और सघन आबादी जैसे कारकों से प्रभावित होता है। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी और अनुकूल जलवायु के कारण कृषि प्रमुख व्यवसाय होता है। यहाँ गेहूँ, चावल, गन्ना, मक्का, दालें आदि की खेती की जाती है तथा व्यापक स्तर पर पशुपालन भी होता है। भारत के उत्तरी मैदान जिन्हें गंगा के मैदान भी कहते हैं दुनियां के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्रों में परिवहन एवं संचार के साधन पर्याप्त होते हैं जिससे व्यापार और उद्योग धन्धे भी पर्याप्त चलते हैं और रोजगार के साधन उपलब्ध होते हैं।

5. पृथ्वी पर रेगिस्तान (एक जटिल भू-आकृति) — रेगिस्तान एक जटिल भू आकृति है क्योंकि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ बहुत कम वर्षा होती है जिसके कारण यहाँ की जलवायु शुष्क और जीवनयापन के लिए चुनौतीपूर्ण होती है। रेगिस्तान के निम्न लक्षण इसे जटिल भू आकृति के रूप में व्यक्त करने का समर्थन करते हैं —

1. बहुत कम वर्षा का होना जो प्रतिवर्ष 25 सेमी से भी कम हो सकती है जबकि मैदानी भागों में औसत वर्षा लगभग 100 सेमी होती है।

2. रेगिस्तान में हवा और पानी के कटाव के कारण अनेक भू-आकृतियाँ जैसे टीले, चट्टानी सतहें और शुष्क घाटियाँ बन जाती हैं तथा बिगड़ती भी रहती हैं।

3. रेगिस्तान में कटीले पेड़-पौधे तथा लोमड़ी, छिपकली, विषैले सांप बहुत पाए जाते हैं जो जीवन को कठिन बनाते हैं।

J. मानचित्र कार्य —

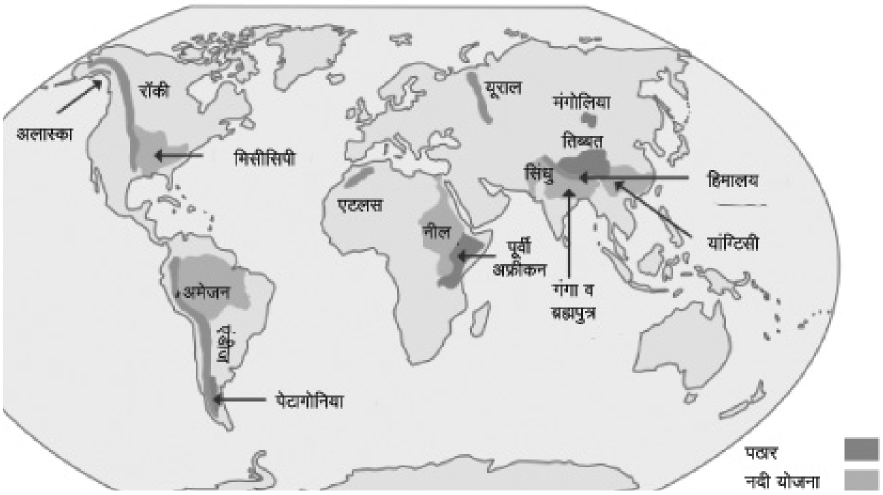

पाठ—4

इतिहास की समय-रेखा और स्रोत

NCERT प्रश्न

1. (विद्यार्थी अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में अपने गाँव के इतिहास के बारे में विभिन्न स्रोतों का उपयोग करते हुए लेख लिखें)।
यथा—मेरे गाँव का नाम हरनाथपुरा है। इसके नामकरण के पीछे हरनाथ सिंह नामक व्यक्ति को आधार माना गया है, जिसका उल्लेख वंशावलियों में मिलता है। इसके गाँव के पूर्वज राजौरगढ़ से उत्प्रवासित होकर गुल्लाना नामक गाँव में बसे थे, फिर वहाँ से पण्डाली में तथा तत्पश्चात् इस गाँव में आकर बसे हैं। इसका उल्लेख यहाँ बनाये गये मकानों, कुओं में मिलता है। श्मशानों में बनाये गये कमरे पूर्वजों के नाम व उनकी जीवनी को दर्शाते हैं। गाँवों में लगाये गये पेड़ पूर्वजों की किंवदंतियों से जुड़े हुए हैं।
2. हाँ, हम इतिहासकारों की तुलना जासूसों से कर सकते हैं। जासूस आपराधिक कार्यों व गुप्त गतिविधियों के बारे में जानकारी खोजते हैं। इसी प्रकार इतिहासकार भी पुरावशेषों की कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए इतिहास की जानकारी खोजने का कार्य करते हैं।
3.

- 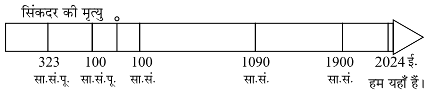

- सम्राट चन्द्रगुप्त का सम्बन्ध ईसा पूर्व चतुर्थ शताब्दी से है तथा इनका जन्म बुद्ध के जन्म से 240 वर्ष पश्चात् हुआ था।
- झाँसी की रानी का सम्बन्ध 19वीं शताब्दी से है। इनका जन्म भारत की स्वतन्त्रता के 119 वर्ष पूर्व हुआ था।
- आज से 12000 वर्ष पूर्व की अवधि अर्थात् वर्तमान का वर्ष 2025 है। अत: 12000–2025 = 9975+1 = 9976 वर्ष पूर्व।

4. (विद्यार्थी अपने शिक्षक के साथ संग्रहालय का भ्रमण करें तथा रोचक जानकारी एकत्रित करके उन्हें लिखें)।
यथा—भ्रमण का स्थान—अल्बर्ट हॉल जयपुर।
पूर्व जानकारी—कहाँ स्थित है? किसने बनवाया क्यों बनवाया, क्यों प्रसिद्ध है।
भ्रमण के दौरान की टिप्पणी—बर्त्तन, औजार, वेशभूषा।
रिपोर्ट लेखन—अल्बर्ट हॉल में विभिन्न प्रकार के बर्तन मौजूद हैं। इसके साथ ही इसमें अनेक पुराने चित्र, दरियाँ, हाथी दाँत,

कीमती पत्थर, धातु, मूर्तियाँ व रंगबिरंगी पोशाकें, राजाओं की तलवारें, उनकी पोशाक, मृदभांड, अस्त्र व ममी भी मौजूद है।

5. अपने विद्यालय में पुरातत्त्ववेत्ता या इतिहासकार को आमन्त्रित करें तथा वर्णित विषय पर व्याख्यान देने व उससे प्राप्त जानकारी एकत्रित करें।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – स, 2 – ब, 3 – ब, 4 – ब, 5 – ब, 6 – स, 7 – स, 8 – स, 9 – स, 10 – अ, 11 – स, 12 – ब, 13 – ब, 14 – ब।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – ग्रेगोरियन, 2 – दशक, 3 – समय रेखा, 4 – जीवाश्म, 5 – पंचांग।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – असत्य, 3 – असत्य, 4 – असत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – द, 2 – अ, 3 – य, 4 – स, 5 – ब

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (अ), 2 – (स)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – स, 2 – स, 3 – अ

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. सहस्राब्दी का समय काल एक हजार वर्ष है।
2. जीवाश्मों का अध्यन करने वाला जीवाश्म विज्ञानी कहलाता है।
3. BCE का अर्थ है सामान्य युग से पहले (Before Common Era)।
4. विश्वभर में सामान्य रूप से उपयोग होने वाला कैलेंडर 'ग्रेगोरियन कैलेंडर'' है।
5. पृथ्वी की भौतिक संरचना का अध्ययन करने वाला व्यक्ति भूविज्ञानी (Geologist) कहलाता है।
6. समय रेखा (Timeline) हमें घटनाओं के क्रम को कालानुक्रमिक रूप में समझने में मदद करती हैं।
7. एक शताब्दी में सौ वर्ष होते हैं।
8. पंचांग एक पारंपरिक भारतीय कैलेंडर है जिसमें भारतीय त्यौहारों, पर्वों, तिथियों के साथ-साथ खगोलीय घटनाओं (सूर्य ग्रहण, चन्द्रग्रहण आदि) की जानकारी होती है।
9. प्राचीन मानव समाजों और उनकी संस्कृति का अध्ययन मानवशास्त्री (Anthropologist) करता है।
10. मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभ में जब मनुष्य ने आपस में मिलकर खेती करना प्रारंभ कियातो उनमें समझदार व्यक्ति जो उनके श्रम और संसाधनों का न्यायपूर्ण बंटवारा करते थे उन्हें मुखिया (chieftains) कहा जाता था।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. एक पुरातत्ववेत्ता, अतीत को उजागर करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह मानव इतिहास और संस्कृतियों को समझने के लिए भौतिक अवशेषों का अध्ययन करता है, जैसे कलाकृतियों, भवनों एवं अन्य भौतिक अवशेषों के माध्यम से प्राचीन जीवन, रीति-रिवाजों एवं सामाजिक प्रथाओं की जानकारी प्रदान करता है।
2. भूवैज्ञानिक पृथ्वी के इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे पृथ्वी की संरचना, आयु और इतिहास को जानने के लिए जीवाश्मों, चट्टानों आदि का अध्ययन करने के लिए रेडियोमेट्रिक डेटिंग, स्ट्रेटीग्राफी आदि तकनीकों का सहारा लेते हैं।
3. इतिहास को समझने एवं घटनाओं को क्रमानुसार व्यवस्थित करने में समय रेखा (Timeline) का बड़ा महत्व है। यह घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करता है जिससे समय के साथ होने वाली घटनाओं के क्रम को समझना आसान हो जाता है।
4. कैलेंडर समय को मापने और व्यवस्थित करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह समय को दिनों, महीनों और वर्षों में विभाजित करता है और इन विभाजनों को एक क्रम में व्यवस्थित करता है जिससे हम ऐतिहासिक घटनाओं के समय को ठीक प्रकार जान लेते हैं।
5. ग्रेगोरियन कैलेंडर इस समय दुनियाँ का सबसे अधिक प्रचलित कैलेंडर है। यह समय को वर्षों, महीनों, सप्ताहों और दिनों में विभाजित करता है। यह एक सौर कैलेंडर है। यह एक वर्ष को 12 महीनों में विभाजित करता है तथा महीनों को सात दिन वाले सप्ताह में विभाजि करता है।
6. जीवाश्म हमें पृथ्वी पर प्राचीन समय के अवशेष या निशान होते हैं जो प्राय: चट्टानों में दबे होते हैं। ये हमें पृथ्वी के इतिहास, जलवायु परिवर्तन और जीवों के विकास के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
7. प्रारंभिक मानव का जीवन बहुत संघर्षमय तथा उसने प्राकृतिक आपदाऐं, जलवायु परिवर्तन, भोजन की कमी, विशाल भयंकर शिकारी

जानवरों के आक्रमण एवं आश्रय के अभाव जैसी अनेक चुनौतियों का सामना किया।

8. **हिमयुग** (Ice Age) — हिम युग एक ऐसा समय होता है, जब पृथ्वी का तापमान बहुत कम हो जाता है तथा पृथ्वी का अधिकांश भाग बर्फ की चादर से ढक जाता है। यह कई चरणों में होता है जिसका सबसे निकट चरण 12,000 (बारह हजार) वर्ष पूर्व समाप्त हुआ है तथा यह भविष्य में भी घटित हो सकता है।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. पृथ्वी के इतिहास को समझने में सहायक वैज्ञानिकों की भूमिकाऐं

   A. **भूवैज्ञानिक** (Geologist) — ये पृथ्वी की भौतिक विशेषताओं जैसे चट्टानों, पहाड़ों, नदियों, मिट्टी आदि का अध्ययन करते हैं तथा पृथ्वी की संरचना एवं उसके गर्भ में होने वाली गतिविधियों द्वारा पृथ्वी के इतिहास को जानने का प्रयत्न करते हैं।

   B. **जीवाश्म विज्ञानी** (Palaeontologist) — ये चट्टानों में दबे पौधों, जानवरों, मनुष्यों के अवशेषों का अध्ययन करके पृथ्वी पर फले-फूले प्राचीन जीवन को समझने एवं समझाने का प्रयास करते हैं।

   C. **मानव विज्ञानी** (Anthropologist) — ये प्राचीन और वर्तमान मानव समाज, संस्कृति, परंपराओं का गहन अध्ययन कर मानव उत्पत्ति एवं विकास के क्रम को स्पष्ट करते हैं।

   D. **पुरातत्ववेत्ता** (Archaeologist) — ये प्राचीन समाज द्वारा अवशेषों के रूप में छोड़ी गयी वस्तुओं, भवनों, नगरों आदि का अध्ययन कर अतीत के लोगों के जीवन रहन-सहन आदि पर प्रकाश डालते हैं।

2. पश्चिमी संस्कृति में यीशु मसीह का जन्म पारंपरिक रूप से उनके कैलेंडर के लिए प्रारंभ बिंदु के रूप में लिया गया है।

   यीशु की पारंपरिक जन्मतिथि से पहले के वर्षो को उल्टी गिनती में गिना जाता है और इन्हें ईसा पूर्व या BC (Before Christ) कहा जाता था जिसे अब BCE अर्थात् Before Common Era (सामान्य युग से पहले) कहा जाने लगा है। जबकि यीशु के जन्म के बाद के वर्षों को सीधा गिना जाता है जिसे AD के रूप में लिखा जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पश्चिमी संस्कृति में यीशु मसीह का जनम उनके ग्रेगोरियन कैंलेडर के लिए प्रारंभिक बिन्दु के रूप में लिया गया है।

3. इतिहास के विभिन्न स्रोत — वे स्थान, व्यक्ति अथवा वस्तु जिनसे हमें पिछले घटना क्रमों या कालखंडों की जानकारी प्राप्त होती है इतिहास के स्रोत कहलाते हैं। ये निम्न प्रकार के होते हैं।

   1. साहित्यिक स्रोत — इसके अंतर्गत वेद, पुराण, महाकाव्य (रामायण, महाभारत आदि), वैज्ञानिक एवं तकनीकी ग्रंथ, कहानी, नाटक आदि हैं।

   2. पुरातात्विक स्रोत — इसके अंतर्गत शिलालेख, स्मारक, टीले, मूर्तियाँ, मिट्टी एवं धातु के खुदाई में प्राप्त वर्तन, सिक्के, ताम्रपत्र, पांडुलिपि आदि आते हैं।

   3. विदेशी यात्रियों के वृतांत — मेगस्थनीज, फाह्यान आदि के यात्रा वृतांत।

   4. मौखिक स्रोत — इसमें लोक साहित्य एवं वंशावली संबंधी जानकारियाँ आती हैं, जो मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रहती है।

4. प्रारंभिक मानव का जीवन— प्रारंभिक मानव का जीवन अनेक कठिनाइयों और संघर्षो से पूर्ण था। वह छोटे-छोटे समूहों में गुफाओं में रहता था, नुकीले पत्थरों को हथियार की तरह प्रयोग करना, खानाबदोश जीवन जीना तथा भोजन एवं आश्रय की तलाश में जगह-जगह भ्रमण करना उसकी दिनचर्या थी। धीरे-धीरे उसने आग जलाना, खेती करना और छोटी-छोटी बस्तियाँ बनाना सीखा। प्रारंभिक मानव का जीवन एक निरंतर विकास की प्रक्रिया थी जिसमें वह प्रकृति के साथ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ा।

5. हिमयुग का महत्व एवं मानव सभ्यता पर इसका प्रभाव— हिमयुग जिसे हम हिमकाल भी कहते हैं, पृथ्वी के इतिहास में एक ऐसा समय था जब तापमान काफी कम हो गया था जिससे पृथ्वी का अधिकांश भाग बर्फ की चादर से ढक गया। हिम युग का मानव सभ्यता पर गहरा प्रभाव पड़ा, विशेषकर प्रारंभिक मानव सभ्यता पर। इसने न केवल मानव अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न किया बल्कि उसके साथ-साथ मानव के अंदर कठिनाइयों से संघर्ष कर अपनी अस्तित्व रक्षा की क्षमता भी उत्पन्न की। हिमयुग ने मानव को संगठन, कृषि विकास, स्थाई बस्तियों के निर्माण एवं तकनीकी विकास की ओर प्रेरित किया।

J. मानचित्र कार्य —

भारत के मानचित्र पर निर्दिष्ट स्थानों को दर्शाएँ—

छात्र का जन्म स्थान उसे स्वयं भरना है, गौतम बुद्ध का जन्म स्थान लुम्बिनी (गोरखपुर) के समीप नेपाल में (लुम्बिनी नेपाल के रूपनदेही जनपद में हैं) एवं सिन्धुघाटी सभ्यता का कोई एक केन्द्र राखीगढ़ी (भारत), मोहन जोदड़ा (पाकिस्तान)

पाठ—5

इंडिया अर्थात् भारत

NCERT प्रश्न

1. प्रस्तुत उद्धरण हमें भारत की गरिमामयी विरासत के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसके अनुसार भारत प्राचीन काल से ही आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को संजोये हुए है। यह क्षेत्र उत्तर में हिमालय से लेकर दो सागरों (अरब सागर, बंगाल की खाड़ी) के बीच महान मानवता की दास्ताँ को बयां करता है।

2. 1. गलत 2. सही 3. सही 4. सही 5. गलत 6. गलत 7. गलत

3. (विद्यार्थी अपनी कल्पना शक्ति अनुसार नामकरण करने का प्रयास करें)।

यथा—यदि मेरा जन्म 2000 वर्ष पूर्व हुआ होता तो मैं अपने देश का नाम 'अनुपम भारत' रखता, जिसके पीछे यहाँ की विकसित सभ्यता, संस्कृति व व्यापार की दशाओं को आधार माना जाता। यहाँ की विलक्षण दशाएँ इसे सम्पूर्ण विश्व से अलग बनाती थीं।

4. 1. उत्कृष्ट सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए।

2. उच्च शिक्षण, अध्ययन व अध्यापन हेतु।

3. व्यापार की प्रक्रिया हेतु।

4. चिकित्सा पद्धति के ज्ञान के लिए।

5. मसालों के क्रय हेतु।

6. कपास/उच्च गुणवत्ता के वस्त्र खरीदने हेतु।

7. सोने-चाँदी के भण्डारों के कारण।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – अ, 2 – अ, 3 – ब, 4 – स, 5 – ब, 6 – ब, 7 – ब, 8 – स, 9 – स, 10 – स, 11 – ब, 12 – ब, 13 – अ, 14 – ब , 15 – ब ।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – भारतों, 2 – जम्बूद्वीप, 3 – भारत, 4 – इंडोई, 5 – हिंदू।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – असत्य, 3 – असत्य, 4 – असत्य, 5 – असत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – य, 2 – अ, 3 – द, 4 – स, 5 – ब

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (अ), 2 – (अ)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – द, 2 – ब, 3 – स

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. महाभारत एक प्राचीन भारतीय महाकाव्य है।
2. सम्राट अशोक।
3. मगध का आधुनिक नाम बिहार है।
4. विष्णुपुराण से ।
5. भगवान बुद्ध।
6. सात नदियों की भूमि।
7. यिंतु या यिंडु।
8. तियान्झू का अर्थ है 'स्वर्ग का स्वामी'।
9. सिंधु नदी को।
10. 26 जनवरी 1950 को भारत का गणतंत्रीय संविधान लागू हुआ।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. प्राचीन ग्रंथों जैसे विष्णु पुराण में भारतवर्ष शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम मिलता है जिसका अर्थ है भारतों की भूमि। ऋग्वेद में भारत नाम एक जनजाति के लिए आया है। प्रारंभ में भारतवर्ष उत्तरी क्षेत्र के लिए प्रयोग होता था जो आगे चलकर पूरे उपमहाद्वीप के लिए प्रयोग होने लगा।

2. महाभारत, भारत की महान गाथाओं में से एक है जिसमें भारत के अनेक क्षेत्रों का वर्णन मिलता है, जैसे- कश्मीर, कुरुक्षेत्र, बंग, प्राज्ञज्योतिष, कच्छ तथा केरल।

3. भारतीय संविधान में 'भारत' शब्द की स्वीकृति का बड़ा महत्व है। यह केवल एक नाम से कहरीं अधिक है। यह राष्ट्र की प्राचीन पहचान,

विरासत और भविष्य के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

4. फारस से 'हिन्दू' शब्द यूनान पहुँचा और यूनानी लोग इसे 'हिन्दू' के स्थान पर 'इंडोई' या 'इंडिके' कहने लगे जो आगे चलकर 'इंडिया' के रूप में लोकप्रिय हो गया।

5. फारसी भाषा ने भारत के नामकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। 'हिन्दुस्तान' नाम जो भारत के लिए काफी लोकप्रिय हो गया है। यह फारसी शब्द 'हिन्दू' से निकला है सिजका अर्थ है सिंधु नदी के पार की भूमि।

6. ह्वेनसांग एक चीनी बौद्ध भिक्षु था जिससे 7 वीं शताब्दी में भारत की यात्रा की। उसके यात्रा वृतांत में तत्कालीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का पर्याप्त विवरण मिलता है।

7. फारसी शिलालेखों में हिंदुस्तान शब्द का अर्थ उस भूभाग से है जो सिंधु नदी के पूर्व में स्थित है। यह फारसी शब्द 'हिंदू' से बना है जिसका अर्थ है सिंधु नदी क्षेत्र के लोग।

8. प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे- वेदों, पुराणों, महाकाव्यों में विभिन्न भौगोलिक स्थानों, नदियों, पहाड़ों, वनस्पतियों, रीतिरिवाजों के माध्यम से भूगोल की जानकारी दी गयी है।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. प्राचीन से लेकर आधुनिक ग्रंथों तक, भारत के विभिन्न नामों का एक रोचक इतिहास है। ऋग्वेद में भारत के 'सप्तसिंधव' नाम का उल्लेख मिलता है जिसका अर्थ है 'सात नदियों की भूमि'। विष्णु पुराण में भारत के भारतवर्ष नाम का विवरण है जो महासागर के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में स्थित भूमि को दर्शाता है। महाभारत में भारतवर्ष के अतिरिक्त 'जम्बूद्वीप' नाम भी मिलता है जो आधुनिक भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के कुछ भाग को दर्शाता है। फारसी ग्रंथों में हिंदू तथा हिंदुस्तान शब्द मिलते हैं जो सिंधु नदी के पूर्व के क्षेत्र में रहने वाले लोगों एवं प्रदेशों के लिए हैं। यूनानीग्रंथों में 'इंडोई' एवं 'इंडिके' शब्द आए हैं। इन सभी नामों में भारत की भौगोलिक स्थिति एवं सांस्कृतिक महत्व का दर्शन होता है।

2. प्राचीन ग्रंथों में भारतीय भूगोल की व्यापक जानकारी मिलती है। सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में भारत को सात नदियों की भूमि 'सप्त सिंधव' कहा जाता है, विष्णु पुराण में भारतों की भूमि भारतवर्ष तथा हिमालय के दक्षिण और महासागर के उत्तर की भूमि कहा है। महाभारत में भारत के अनेक भौगोलिक क्षेत्रों जैसे कश्मीर, केरल, कुरुक्षेत्र, कच्छ, बंग आदि का वर्णन मिलता है। फारसी ग्रंथों में सिंधु नदी के पूर्व का देश 'हिन्दुस्तान' का वर्णन मिलता है। इसी प्रकार यूनानी एवं चीनी ग्रंथों में भी भारत का वर्णन मिलता है।

3. भारतीय संविधान में 'भारत' शब्द की स्वीकृति का विशेष महत्व है क्योंकि यह देश की प्राचीन पहचान एवं व्यापक विस्तार को व्यक्त करता है। संविधान का अनुच्छेद 1 भारत को 'इंडिया अर्थात् भारत' बताता है जिसका अर्थ है कि भारत इस देश का आधिकारिक नाम है तथा 'इंडिया' एक वैकल्पिक नाम है। भारत शब्द देश की प्राचीन सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पहचान को व्यक्त करता है। यह शब्द देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और गौरव का प्रतीक है।

4. भारत और फारस के बीच घनिष्ठ ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व से ही फारसी ग्रंथों में भारत का उल्लेख मिलता है। फारसी सम्राट दारियस ने सिंधु नदी तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया जिसे फारसियों ने 'हिंद' एवं 'हिंदू' रूप में बदल दिया। इस शब्द का प्रयोग वे सिंधु नदी के आसपास के क्षेत्रों के लिए करते थे। यही शब्द कालांतर में 'हिंदुस्तान' में बदल गया।

5. चीनी यात्री ह्वेनसांग का भारतीय संस्कृति एवं धर्म के क्षेत्र में बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने 7वीं शताब्दी में भारत की यात्रा तथा भारत के शहरों, शिक्षा प्रणालियों, धर्मों, शासन व्यवस्थाओं और सामाजिक जीवन के बारे में विस्तार से जानकारी एकत्र की। उस समय भारत में हर्षवर्धन का शासन काल था। वे अपने साथ 657 संस्कृत ग्रंथों को लेकर चीन लौटे जिन्हें वहाँ चीनी भाषा में अनुवाद किया जिससे पूर्वी एशियाई बौद्ध धर्म पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके लेख आज भी इतिहासकारों के लिए अमूल्य धरोहर बने हुए हैं।

J. मानचित्र कार्य —

1.

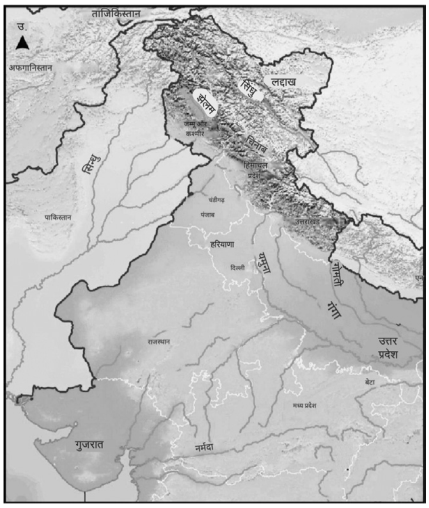

2.

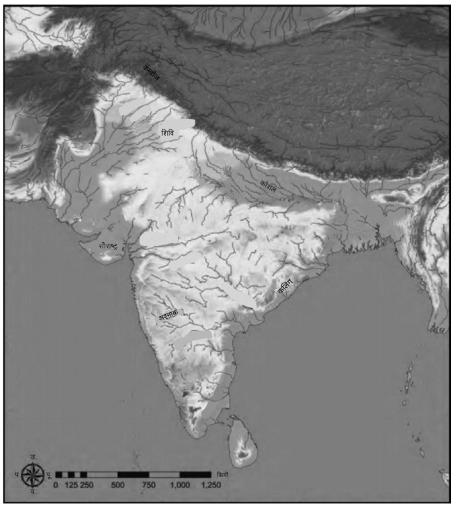

पाठ—6

भारतीय सभ्यता का प्रारंभ

NCERT प्रश्न

1. इस अध्याय में अध्ययन की गई सभ्यता के अनेक नाम होने के पीछे यहाँ मिलने वाले लक्षणों को आधार माना गया है। विविध विशेषताओं के आधार पर इन्हें अलग-अलग नाम दिये गये थे। यहाँ मिले अवशेषों के आधार पर भी इनका नामकरण किया गया है। यथा—काली चूड़ियों के आधार पर काली बंगा, मुर्दों के टीलों के आधार पर मोहनजोदारो, सफेद रेत (कच्छ के रण) के आधार पर धौलावीरा, समुद्र व स्थल के मिलन स्थल (गोदी) के आधार पर लोथल नामकरण हुआ है।

ये सभी सभ्यताएँ विशिष्ट महत्त्व रखती हैं। वर्तमान में इन सभ्यताओं से प्राप्त हुए अवशेष, बर्तन, औजार, अनाज घर, स्नानघर, नालियाँ, जलाशय, आवास आदि के द्वारा हमें तत्कालीन दशाओं के बारे में जानकारी मिलती है। ये सभ्यताएँ नगर नियोजन, जल प्रबन्धन, भण्डारण, जल निकास की सुव्यवस्थित स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं, जिनको आधार मानकर वर्तमान की गतिविधियों को संचालित करने में मदद मिलती है।

2. सिन्धु—सरस्वती सभ्यता की उपलब्धियों का सार

नगर नियोजन—इन सभ्यताओं में कुशल नगर नियोजन की दशा देखने को मिलती है। इनमें आवास अच्छी गुणवत्ता वाली ईंटों से बनाये गये थे। नगरों को व्यवस्थित सड़क मार्गों से जोड़ा गया था।

जल प्रबन्धन—इन सभ्यताओं में जल निकास व जल संग्रहण के लिए पर्याप्त व्यवस्था की गयी थी। यहाँ जल निकास हेतु नाली व्यवस्था निर्मित की गयी थी, जल संग्रहण हेतु तालाबों व जलाशयों का निर्माण किया गया था।

व्यापार का विकसित स्वरूप—इन सभ्यताओं के लोग वस्तुओं का आदान-प्रदान करके व्यापारिक प्रक्रियाओं को सम्पन्न करते थे। इस काल में वस्तु विनिमय की प्रणाली प्रचलित थी। ये वस्त्रों, मसालों, अभूषणों, लकड़ी, सोने, कपास आदि का व्यापार करते थे।

भोजन व्यवस्था—इन सभ्यताओं के लोग पौष्टिक भोजन करते थे, जिनमें अनाजों के साथ-साथ, फलियाँ, सब्जियाँ, दालें, मछली आदि का प्रयोग इनकी कुशलता को प्रदर्शित करता है। ये रसोई कला में प्रवीण थे।

3. वर्तमान में यदि मुझे हड़प्पा से कालीबंगा तक की यात्रा करनी पड़े तो मेरे पास विविध विकल्प मौजूद हैं जिनमें रेल परिवहन, बस परिवहन, चौपहिया वाहन, दोपहिया वाहन, साइकिल व पैदल यात्रा की जा सकती है।

रेल यात्रा में लगने वाला अनुमानित समय	–	4 घण्टे
बस यात्रा में लगने वाला अनुमानित समय	–	6-7 घण्टे
चौपहिया वाहन (कार) से लगने वाला अनुमानित समय	–	6 घण्टे
दोपहिया (मोटर साइ. किल) से लगने वाला अनुमानित समय	–	7.–7.30 घण्टे
साइकिल से लगने वाला अनुमानित समय	–	5 – 7 दिन
पैदल यात्रा में लगने वाला समय	–	20-25 दिन

4. यदि हम हड़प्पा के किसी पुरुष या महिला को आज के सामान्य रसोईघर में ले जाते हैं तो उन्हें निम्न आश्चर्य लगेंगे–

1. रसोईघर में विद्यमान फ्रिज
2. प्रेशर कुकर का उपयोग
3. बिजली की व्यवस्था
4. एल्यूमिनियम व स्टील के बर्तनों का प्रयोग
5. गैस चूल्हे का प्रयोग
6. पैक्ड मसाले।

5. इस अध्याय के चित्रों पर दृष्टि डालने पर निम्न दशायें वर्तमान में भी देखने को मिलती हैं–

1. कृषि में प्रयुक्त हल
2. स्त्रियों की चूड़ियाँ
3. मनके
4. मिट्टी के बर्तन
5. तालाब व जलाशय
6. नाली निर्माण प्रक्रिया आदि।

6. धौलावीरा के जलाशयों की प्रणाली तत्कालीन लोगों की दीर्घकालीन व विकसित उन्नत सोच को प्रतिबिम्बित करती है। तालाबों व जलाशयों का निर्माण शुष्क काल में वर्षा जल के उपयोग की सोच का परिचायक है। इनकी वास्तुकला अद्‌भुत स्वरूप को दर्शाती है। ये लोग जल प्रबन्धन की परिपक्व सोच को दर्शाते हैं।

7. मोहनजोदड़ो में ईंटों से निर्मित कुओं की स्थिति व उनके नियमित रख-रखाव से यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन लोग भूमिगत जल के बारे में जानते थे तथा इसका उपयोग करने के लिए इन्होंने कुओं को बनाना सीख लिया था। 700 कुओं की स्थिति जनसंख्या की दशा को भी दर्शाती है। इनका रख-रखाव इन लोगों की स्वच्छता सम्बन्धी प्रक्रिया व मरम्मत प्रणाली सम्बन्धी कुशलता का भी परिचायक है। ये लोग आगामी पीढ़ियों के हितों को ध्यान में रखकर कार्य करते थे।

8. हड़प्पावासी अपने आपको उच्च भाव से युक्त मानते थे। मैं इस बात से पूर्ण सहमत तो नहीं हूँ किन्तु वर्तमान में भारत के महानगरों के नागरिकों में भी ऐसी स्थिति अवश्य देखने को मिलती है। महानगरों के निवासी अपने आप को छोटे नगरों, कस्बों व गाँवों के निवासियों की तुलना में उच्च भाव से युक्त मानते हैं। महानगरों में इनके मकान होना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक समझा जाता है। इसी प्रकार हड़प्पा सभ्यता क्षेत्र में लोगों का निवास भी एक तरह से प्रतिष्ठा का प्रतीक अवश्य रहा होगा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – ब, 2 – ब, 3 – स, 4 – स, 5 – ब, 6 – अ, 7 – ब, 8 – ब, 9 – ब, 10 – ब, 11 – स, 12 – ब।

B. रिक्त स्थान भरें –

1 – वस्त्र, 2 – धौलावीरा, 3 – वस्त्रों और विचारों, 4 – कपास, 5 – लोथल।

C. सत्य/असत्य

1 – सत्य, 2 – सत्य, 3 – असत्य, 4 – सत्य, 5 – असत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – य, 2 – अ, 3 – द, 4 – ब, 5 – स

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (अ), 2 – (द)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – ब, 2 – ब, 3 – अ

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. हड़प्पा शहर।
2. सरस्वती नदी की।
3. ताँबा एवं टिन।
4. धार्मिक अनुष्ठानों में स्थान के लिए।
5. गेहूँ, जौ, बाजरा।
6. स्टीटाइट (सेलखड़ी) का।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. सभ्यता के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित होते हैं— (i) प्रशासन, (ii) नगरीकरण, (iii) कला और शिल्प, (iv) व्यापार, (v) लेखन, (vi) संस्कृतिक विचार, (vii) कृषि।
   जिस समाज में उपरोक्त लक्षण होते है, उसे सभ्य (उन्नत) समाज माना जाता है।
2. हड़प्पा सभ्यता की आवास व्यवस्था एवं वस्तुकला बहुत उत्तम थी। इस सभ्यता के शहरों में पकी हुई ईंटों का व्यापक उपयोग हुआ था, घरों में आँगन, कमरे एवं शौचालय होते थे। जल निकास के लिए नालियाँ थीं तथा शहरों को ग्रिड प्रणाली के आधार पर बसाया गया था।
3. मोहन जोदड़ो का महान स्नानागार सिंधु घाटी सभ्यता की एक महत्वपूर्ण संरचना है। यह एक बड़ा आयताकार तालाब था जो पक्की ईंटोंसे बना था तथा इसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों में स्थान के लिए किया जाता था। इसकी केन्द्रीय स्थान पर स्थिति दर्शाती है कि यह सामाजिक समारोहों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा होगा।
4. हड़प्पावासी कुशल जल प्रबंधक थे। उनके शहरों में कुएँ, जलाशय, नालियाँ आदि का होना यह प्रमाणित करता है कि उन्हें जल प्रबंधन का उत्तम ज्ञान था।
5. हड़प्पा सभ्यता के विकास में कृषि का महत्वपूर् ्ण योगदान रहा है। सिचाई प्रणाली, उन्नत कृषि तकनीक, जरूरत से अधिक अनाज का निर्यात एवं अन्न भंडारण की सुविधा से हड़प्पा सभ्यता एक संपन्न सभ्यता बनी।
6. व्यापार के क्षेत्र में हड़प्पावासी अनेक प्रकार की वस्तुओं का आदान-प्रदान करते थे जैसे वे वस्त्र, कपास, मोती एवं आभूषणों का निर्यात करते थे तथा तांबा, सोना, चांदी जैसी वस्तुओं का आयात करते थे।
7. हड़प्पावासियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली मुहरों का मुख्य उद्देश्य व्यापार और वाणिज्य में पहचान एवं सुरक्षा को सुनिश्चत करना था। कुछ मुहरों का उपयोग धार्मिक एवं व्यक्तिगत पहचान के लिए भी किया जाता था।
8. हड़प्पा सभ्यता को सिंधु सरस्वती सभ्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सभ्यता सिंधु नदी एवं सरस्वती नदी के आसपास के क्षेत्रों में विकसित हुई तथा इस सभ्यता के विकास में इन दोनों नदियों का विशेष योगदान भी रहा था।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना एवं वास्तुकला : हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना एवं वास्तुकला उत्कृष्ट थी। हड़प्पा सभ्यता के शहर ग्रिड प्रणाली आधारित थे, सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। सड़कें चौड़ी थीं तथा सड़कों के किनारे में जलनिकास के लिए नालियाँ थीं। घर पक्की ईंटों के बने थे तथा उनमें आंगन, स्नानागार, शौचालय आदि की सुविधा थी। सार्वजनिक स्नानागार, जलाशय तथा अनाज भंडार भी थे। कुछ शहरों में किले भी बनाए गये थे।
2. हड़प्पावासियों की जलप्रबंधन तकनीकें — हड़प्पावासियों को जलप्रबंधन का अच्छा ज्ञान था। सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों में, घरों से निकलने वाले गंदे पानी के लिए सड़कों के किनारे पर नालियों का प्रबंध था। ये नालियां पक्की ईंटों से बनी थी तथा इन्हें ढका भी जाता था। धौलावीरा में जलाशयों का एक जटिल जाल लिा है जो वर्षा जल को एकत्र करने तथा उपयोग करने के लिए था। मोहनजोदड़ों में कुएँ मिले हैं तथा लोथल में छोटे बाँधों के उपयोग के साक्ष्य भी मिले हैं।
3. हड़प्पा सभ्यता में व्यापार का महत्व— हड़प्पा सभ्यता के विकास में व्यापार का बड़ा महत्व रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता कृषि एवं व्यापार पर आधारित थी जिसमें घरेलू एवं विदेशी दोनों ही प्रकार के व्यापार होते थे। हड़प्पावासी कृषि उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, धातु, मोती एवं वस्त्रों का व्यापार करते थे। व्यापार के कारण हड़प्पावासियों का अन्य सभ्यताओं के लोगों से संपर्क हुआ था। शहरों का विकास हुआ। उनके मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संबंध थे।
4. हड़प्पा सभ्यता के पतन के मुख्य कारण — हड़प्पा सभ्यता के पतन के निम्न मुख्य कारण हो सकते हैं —

   1. जलवायु परिवर्तन — सिंधु घाटी क्षेत्र में ठंड और शुष्कता की अप्रत्याशित वृद्धि होने से खेती

को नुकसान पहुँचा और खाद्यान्न की कमी हो गयी जिससे लोगों ने यह क्षेत्र छोड़ दिया।

2. नदियों के मार्ग में परिवर्तन — सिंधु सभ्यता जिन नदियों के आस-पास फल-फूल रही थी उन नदियों के मार्ग भूकंप और बाढ़ आदि से परिवर्तित हो गए अथवा नदियाँ सूख गयीं और लोगों ने यह स्थान छोड़ दिया।

3. प्राकृतिक आपदा, व्यापार में कमी अथवा विदेशी आक्रमण भी सिंधु सभ्यता के लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं।

5. हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक और आर्थिक ढाँचे के विषय में पुरातत्व अवशेषों से पर्याप्त जानकारी मिलती है। ये अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि —

1. हड़प्पा सभ्यता मातृसत्तात्मक था, जहाँ परिवार में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान था।

2. हड़प्पा सभ्यता एक शहरी सभ्यता थी क्योंकि हड़प्पा और मोहन जोदड़ो जैसे शहरों की योजनाबद्ध संरचना, पक्की ईंटों के मकान, जल निकास प्रणाली एवं सार्वजनिक स्नानागार एक विकसित शहरी सभ्यता को प्रमाणित करते हैं।

3. हड़प्पा सभ्यता कृषि एवं व्यापार आधारित थी। गेंहूँ, जौ, बाजरा, कपास की खेती होती थी मेसोपोटामिया एवं अन्य क्षेत्रों से वस्तुओं का आयात निर्यात होता था।

4. मिट्टी, धातु के बर्तन, सोने-चाँदी के आभूषण बनाए जाते थे तथा महिला एवं पुरुष दोनों ही आभूषण पहनते थे।

5. व्यापार के लिए मुहरों का उपयोग एवं अन्न संग्रह के अन्न भंडारों के प्रमाण भी मिले हैं।

J. मानचित्र कार्य —

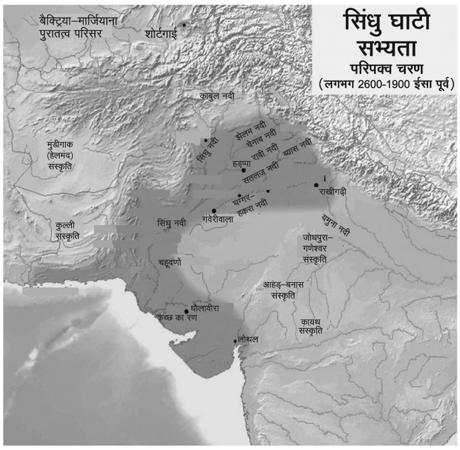

पाठ—7

भारतीय की सांस्कृतिक धरोहर

NCERT प्रश्न

1. यदि मैं नचिकेता होता तो यम से निम्न प्रश्न पूछता—

(i) मृत्यु क्यों होती है?

(ii) क्या मृत्यु पर विजय पायी जा सकती है?

(iii) आत्मा दिखाई क्यों नहीं देती?

(iv) आत्मा को कैसे देखा जा सकता है?

(v) मृत्यु के बाद आत्मा कहाँ जाती है?

(vi) आत्मा का अस्तित्व क्यों है?

2. (i) **अहिंसा**—जीव पर हिंसा न करना (शारीरिक व मानसिक)।

(ii) **आत्म अनुशासन**—अपने आप को संयमित व नियन्त्रित रखना।

(iii) **सत्य व धर्म का अनुसरण**—इसे पवित्रता का सर्वोत्कृष्ट परिचायक माना था।

(iv) स्वयं पर विजय अर्थात् स्व नियन्त्रण।

(v) करुणा—दया से ओत-प्रोत होना।

(vi) आसक्ति (लोभ, मोह) का त्याग करना आदि।

3. बुद्ध का यह उद्धरण शारीरिक स्वच्छता के स्थान पर मानसिक स्वच्छता पर बल देता है। बुद्ध के अनुसार किसी पवित्र नदी में लोग स्नान करके यह मान लेते हैं कि उनके पाप कर्म धुल गये हैं अर्थात् उनके द्वारा किये गये गलत कार्यों का उन्हें फल नहीं भुगतना पड़ेगा, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता। व्यक्ति को मानसिक रूप से अधिक पवित्र होना चाहिए।

4. जैन धर्म के दो प्रमुख विचार निम्नानुसार हैं—

- **अनेकांतवाद**—इसका अर्थ है 'सिर्फ एक दृष्टिकोण नहीं।' सत्य के कई पक्ष होते हैं। उदाहरण के लिए आँखों पर पट्टी

बाँधकर एक हाथी को छूने वाले लोग अलग-अलग अनुभव करेंगे—कोई कहेगा यह खम्भे (पैर) जैसा है, तो कोई कहेगा यह रस्सी (पूँछ) जैसा है किन्तु दोनों अपने-अपने दृष्टिकोण से सही हैं।

- **अपरिग्रह—**इसका अर्थ है गैर-अधिकारवाद या गैर-भोगवाद। यह हमें सादगी से जीने, केवल वही रखने को प्रोत्साहित करता है जो वास्तव में आवश्यक है और भौतिक वस्तुओं को अपने जीवन पर हावी नहीं होने देने की शिक्षा देता है।

5. आन्द्रे बेते के कथन के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में मिलने वाली हजारों जातियों व जन-जातियों द्वारा एक-दूसरे के धार्मिक विश्वासों को इतिहास के प्रारम्भ से ही प्रभावित किया गया है। यह सत्य है कि जनजातीय आस्था मुख्यत: हिन्दू धर्म से सम्बन्ध रही है। किन्तु इस जनजातीय धर्म का अपना भी एक अलग महत्त्व है। यह कथन सार्थक प्रतीत होता है। जनजातियों के धार्मिक विश्वास अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।

6.

तेजा दशमी	—	तेजाजी
ईश्वर - गणगौर	—	गणगौर
बास्योड़ा (शीतला अष्टमी)	—	शीतला माता
मकर संक्रांति	—	सूर्य देव
शिवरात्रि	—	शंकर भगवान

7. मेरे राज्य राजस्थान में अनेक जनजातीय समूह मिलते हैं, जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं—

मीणा—उत्पत्ति मीन अर्थात् मछली (विष्णु के मत्स्य अवतार से मानते हैं) हिन्दू त्योहारों, देवी-देवताओं को मानते व पूजा करते हैं। मछली का भक्षण निषेध है। पुरुष धोती-कुर्ता, गमछा धारण करते हैं। स्त्रियाँ घाघरा, लुगड़ी पहनती हैं। कृषि व पशुपालन मुख्य कार्य है। पितृ सत्तात्मक प्रणाली मिलती है। पटेल सामाजिक निर्णय करते हैं। आटा-साटा, नातेदारी प्रथा मिलती है।

भील—भगवान शंकर के वंशज माने जाते हैं। हिन्दू देवी-देवताओं में विश्वास करते हैं। काली माता, भैरव बाबा की पूजा करते हैं। बेणेश्वर धाम प्रसिद्ध मेला है। लंगोटिया व पोतिदा भील होते हैं। दलिया व चिमाता कृषि करते हैं। दापा प्रथा पायी जाती है। फाइरे-फाइरे रणघोष हैं। महिलाएँ गोदने गुदवाती हैं। हाथी दाँत की चूड़ियाँ पहनती हैं।

8. 1. सही 2. सही 3. सही 4. गलत 5. गलत 6. सही 7. गलत

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – स, 2 – अ, 3 – स, 4 – द, 5 – द, 6 – ब, 7 – द, 8 – अ, 9 – ब, 10 – अ, 11 – स, 12 – ब, 13 – अ, 14 – स, 15 – द।

B. रिक्त स्थान भरें —

1–शारीरिक नुकसान, 2–विजेता, 3–अनेकांतवाद, 4 – अपरिग्रह, 5 – चार्वाक।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – सत्य, 4 – सत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – ब, 2 – स, 3 – य, 4 – अ, 5 – द

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (ब), 2 – (अ)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – ब, 2 – द, 3 – अ

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. महावीर स्वामी जी के अनुसार, ''सभी श्वांस लेने वाले संवेदन प्राणियों को न मारा जाय, न गाली दी जाय और न सताया जाय''। यही अहिंसा है।
2. पुनर्जन्म (संसार) के चक्र से मुक्त होना मोक्ष कहलाता है।
3. वैदिक संस्कृति में 'ऋषि' वेदों के ज्ञान के प्रकाशक एवं आध्यात्मिक गुरू माने जाते हैं जिन्होंने वेद मंत्रों को देखा एवं उनके अर्थों का उपदेश किया।
4. भारतीय देश में धर्म व्यक्ति के सदाचार एवं नैतिक कर्त्तव्यों को संदर्भित करता है।

5. देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अग्नि में हवि देना यजन या यज्ञ कहलाता है।
6. हिंदू धर्म में परम सत्य एवं ब्रह्मांड की सर्वोच्च शक्ति जो सभी अस्तित्वों का मूल आधार है ब्रह्मा कहलाती है।
7. बौद्ध धर्म में भिक्षुओं और भिक्षुणियों का समुदाय जो बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित था संघ कहलाता था।
8. अनेकांतवाद यह बताता है कि परमसत्य जटिल है और इसे सिर्फ एक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता बल्कि विविध दृष्टिकोण की सहायता से अच्छी प्रकार समझा जा सकता है।
9. 'महावीर' जैन धर्म के संस्थापक थे जिनका पूर्व नाम वर्धमान था तथा वे 6वीं शताब्दी ई.पूर्व. में वैशाली में एक राजपरिवार में जन्मे।
10. वैदिक अनुष्ठानों में अग्नि की प्रमुख भूमिका होती है तथा यज्ञों में अग्नि के माध्यम से ही हवि सभी देवताओं को प्रदान की जाती है।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. बरगद के पेड़ की विशेषताएँ हैं- गहरी जड़ें, विशाल शाखाऐं और पत्ते, दीर्घायु, अनेक जीवों का आश्रय एवं राष्ट्रीय प्रतीक। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति गहरे और मजबूत ज्ञान पर आधारित है, बहुत प्राचीन एवं अनंतकाल तक चलने वाली है, अनेक विचारधाराओं को आश्रय देने वाली है तथा देश की एकता एवं अखंडता का प्रतीक है।
2. वेद का अर्थ होता है— ज्ञान। चार वेदों के नाम हैं— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
3. वेदों के पवित्र मंत्र इंद्र, अग्नि, सरस्वती, वरुण, मित्र, ऊषा आदि अनेक देवी देवताओं को संबोधित करते हैं।
4. वैदिक धर्म सिर्फ अनुष्ठानों एवं प्रार्थनाओं पर आधारित नहीं था बल्कि चिंतन, मनन एवं जिज्ञासा भी इसका अभिन्न अंग थे जिससे इसने शक्तिशाली दार्शनिक विचारों को जन्म दिया।
5. महात्मा बुद्ध ने अपने महल के अंदर के सुखी जीवन से बाहर आकर जब एक वृद्ध व्यक्ति, एक मृत शरीर, एक बीमार व्यक्ति एवं एक शांत तपस्वी को देखा तो उनके मन में अनेक जिज्ञासाऐं उत्पन्न होने लगीं और उनका जीवन बदल गया।
6. जैन धर्म का सार है एक ऐसी अवस्था की प्राप्ति जहाँ पूर्ण शांति हो, जहाँ सबसे छोटे जीवन को भी हानि न पहुँचाई जाए और हर क्रिया दयालुता से प्रेरित हो।
7. चार्वाक विचारधारा का मानना था कि केवल भौतिक संसार ही वास्तविक है तथा परलोक एवं पुनर्जन्म की अवधारणाऐं व्यर्थ हैं।
8. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 705 मान्यता प्राप्त जनजातियाँ थी, जो विभिनन राज्यों में फैली हुई थी और उस समय इनकी कुल जनसंख्या लगभग 10.4 करोड़ थी।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. वैदिक समाज एवं उसके तत्व — वेद की शिक्षाओं पर आधारित समाज को वैदिक समाज कहते हैं। यह समाज व्यवस्था प्रारंभिक भारत में विकसित हुई तथा इसके प्रमुख तत्व थे—

   (i) वर्ण व्यवस्था — वैदिक समाज चार वर्णों में विभाजित था - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र।

   (ii) आश्रम व्यवस्था — वैदिक समाज में मानव जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया गया था— ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एवं संन्यास आश्रम।

   (iii) राजा, सभा एवं समिति — वैदिक समाज का राजनैतिक जीवन सामाजिक संगठन पर आधारित था, राजा, सभा और समिति की सलाह से राजकार्य चलाता था।

   (iv) यज्ञ — यज्ञ वैदिक समाज का मूल तत्व था तथा वैदिक समाज में विशेष अवसरों पर तथा दैनिक भी यज्ञों के आयोजन होते रहते थे तथा वैदिकधर्मी अग्नि के माध्यम से देवताओं की पूजा करते थे।
2. बौद्ध धर्म उन विचारधाराओं में से एक था जिसने वैदिक विचारधारा को नकार दिया एवं अपने हर अलग धार्मिक प्रणाली विकसित की। बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ (गौतम) थे जिनका जन्म 560 ईसापूर्व लुम्बिनी (नेपाल) में हुआ। उनके अनुसार हिंसा न करना एवं आंतरिक अनुशासन को रखना धर्म का मूलतत्व थे। उनकी शिक्षानुसार- ''पवित्र नदियों में स्नान करने से कोई पवित्र नहीं होता लेकिन वह व्यक्ति पवित्र है जिसमें सत्य और धर्म बसते हैं। हजारों बार युद्ध में हजारों लोगों को हटाने से बड़ा है स्वयं पर विजय पाना।
3. नैतिकता और दर्शन को समझने में सहायक भगवान महावीर की मुख्य शिक्षाऐं निम्न हैं-

   (i) जैन धर्म का मूल सिद्धांत है अहिंसा का सिद्धांत। भगवान महावीर के अनुसार मन, वचन तथा कर्म से किसी भी प्राणी को हानि न पहुँचाना अहिंसा कहलाती है।

   (ii) अपरिग्रह जैन धर्म एवं महावीर स्वामी जी की दूसरी प्रमुख शिक्षा है। महावीर जी ने भौतिक वस्तुओं के अत्यधिक संचय एवं भोग को गलत बताया गया सादगी एवं अल्प साधनों से जीवनयापन का उपदेश किया।

   (iii) अनेकांतवाद महावीर स्वामी की अतिमहत्वपूर्ण शिक्षा है जो यह व्यक्त करती है

कि किसी महान सत्य को ठीक प्रकार से समझने के लिए मात्र एक ही मार्ग या दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए विभिन्न दृष्टिकोणों से सहायता लेनी पड़ती है।

4. भारत में जनजातीय लोकपरंपराओं एवं सांस्कृतिक तथा धार्मिक प्रथाओं के बीच गहरा संबंध रहा है। भारत की जनजातीय संस्कृतियां जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग है। उनकी अपनी कला, संगीत, नृत्य तथा धार्मिक प्रथाऐं होती हैं जिनमें प्रकृति पूजा, पितृपूजा जैसी अनेक धार्मिक प्रथाऐं उनकी व्यापक लोक परंपराओं का विशेष अंग है।

5. वैदिक संस्कृति में या अनुष्ठानों का विशेष महत्व रहा है। ये अनुष्ठान न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं बल्कि इनका आध्यात्मिक एवं सामाजिक जीवन में भी गहरा प्रभाव रहा है। वर्तमान समय में भी यज्ञों की प्रासंगिकता बनी हुई है और ये आधुनिक आध्यात्मिक प्रथाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यज्ञों के माध्यम से मन और आत्मा की शुद्धि होती है और व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास होता है। आज भी वैदिक संस्कृति में सभी शुभ कार्य यथा विवाह, नामकरण, गृह प्रवेश आदि यज्ञों द्वारा ही संपन्न होते हैं।

J. मानचित्र कार्य —

(भारत में मानचित्र पर निम्न स्थानों को दर्शाऐं)

(अ) सप्त सिंधव क्षेत्र = पंजाब (भारत-पाकिस्तान)

(ब) गौतम बुद्ध का जन्मस्थान = लुम्बिनी (नेपाल)

(स) भगवान महावीर का जन्मस्थान = वैशाली (बिहार)

(द) टोडा जनजाति वाला राज्य = तमिलनाडु

(य) भगवान जगन्नाथ का पूजा स्थल = उड़ीसा वाला राज्य।

पाठ—8

विविधता में एकता अथवा अनेकता में एकता

NCERT प्रश्न

1. प्रस्तुत उद्धरण में रवीन्द्र नाथ टैगोर भारत की अनेकता में एकता की भावना को देखते हुए कहते हैं कि हे प्रभु मैं इस अनेकता में एकता की स्थिति को कभी न खोऊँ अर्थात् मेरा भारत इसी प्रकार एकजुट बना रहे।

श्री अरविन्द ने भी कहा है कि विविधता में एकता का सिद्धान्त हमेशा भारत के लिए सामान्य रहा है व इसकी प्रकृति इसके अस्तित्व व इसके स्वभाव का मूलमन्त्र है। इस अनेकता में एकता की दशा द्वारा स्वधर्म की नींव सदैव मजबूत बनी रहेगी।

2. राष्ट्रगान को पढ़ने पर इसमें अनेक विविधताएँ मिलती हैं। इसमें पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्रविड, उत्कल, बंगाल, विन्ध्याचल, हिमाचल/हिमालय, यमुना, गंगा आदि की दशाओं को वर्णित किया गया है। इनमें विविधताएँ होते हुए भी भारत एक है जो भाग्य का निर्धारण करने वाला है।

3. **हाथी व चूहे की कहानी—**यह कहानी एक-दूसरे की जरूरत के समय मदद करने पर बल देती है।

बन्दर व मगरमच्छ की कहानी—जो हम पर विश्वास करता है, उसे कभी धोखा नहीं देना चाहिए।

मूर्ख बातूनी कछुवे की कहानी—कुछ भी बोलने से पूर्व वहाँ की परिस्थिति का ध्यान रखना चाहिए।

शेर व खरगोश की कहानी—बल की अपेक्षा बुद्धि से काम लेना चाहिए।

हाँ, मैं अपने क्षेत्र से सम्बन्धित कहानी भी जानता हूँ।

4. **भौमिया जी की कथा—**मातृभूमि की रक्षा करना सर्वोपरि धर्म है।

गोगाजी, पाबूजी की कथा—गायों व जीवों की रक्षा करना सर्वोपरि कर्त्तव्य है।

तेजाजी की कथा—वचन निभाने के लिए बलिदान देना भी श्रेष्ठ है।

5. हाँ, मैंने प्राचीन कहानी को प्रदर्शित होते देखा है। प्रतिवर्ष अलवर जिले में महाराजा भर्तृहरि की कहानी का मंचन किया जाता है जो अत्यधिक रोचक है। इसी के साथ मैंने रामलीला व रासलीला का मंचन होते हुए भी देखा है।

6. जवाहरलाल नेहरू द्वारा वर्णित ये पंक्तियाँ भारतीय लोगों में विद्यमान नैतिकता के मूल्यों

का वर्णन करती हैं। भारतीय लोग अपनी परम्पराओं व काव्यगत ज्ञान के कारण मौलिक नैतिक ज्ञान से ओत-प्रोत हैं। महाकाव्यों में वर्णित दशाओं ने लोगों के अन्तर्मन पर गहरी छाप डाली है, जिससे लोग उनका अनुसरण करना श्रेष्ठ मानते हैं तथा इनके पात्रों के अनुसार अपने आपको ढालना चाहते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत की बेजोड़ता को दर्शाता है। आपसी प्रेम, कर्त्तव्य निष्ठा, वचनबद्धता, मर्यादा, स्त्री रक्षा, मातृभूमि रक्षा की भावना भारतीयों में पूर्णतः समाविष्टता को दर्शाती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – स, 2 – द, 3 – ब, 4 – ब, 5 – स, 6 – द, 7 – अ, 8 – ब, 9 – स, 10 – स, 11 – अ, 12 – ब, 13 – स, 14 – ब, 15 – स।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 –विंसेट स्मिथ, 2 – इलायची, 3 – कौरवों, 4 – 325, 5 – लोक।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – असत्य, 3 – असत्य, 4 – असत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – ब, 2 – स, 3 – द, 4 – य, 5 – अ

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (स), 2 – (स)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – स, 2 – द, 3 – ब

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. भारतीय साहित्य का मुख्य विषय विविधता में एकता को प्रदर्शित करना है।
2. तूर दाल एवं चना की दाल।
3. साधारण कपड़ा।
4. 20वीं शताब्दी के अंत में।
5. बाजरा।
6. मकर संक्रान्ति।
7. रामायण।
8. कर्त्तव्यपालन एवं न्याय के लिए संघर्ष ही धर्म है।
9. दाल-रोटी।
10. साड़ी।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. भारतीय संस्कृति में विविधता में एकता का अर्थ है भारत विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का देश होने पर भी इन सभी में कुछ ऐसी समानताऐं हैं जो भारत की एकता को पुष्ट करती हैं।
2. भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजन भिन्न-भिन्न विधियों से बनाए जाते हैं लेकिन इस विविधता के बावजूद भोजन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री एवं मसाले उन व्यंजनों में कुछ सुगंध और स्वाद की समानता उत्पन्न करते हैं।
3. भारतीय परंपरा में 'साड़ी' का विशेष महत्व है। इसे भारत के अधिकांश भागों की महिलाऐं पहनती हैं। भले ही इसे बनाने, पहनने और डिजाइन करने के तरीके भिन्न-भिन्न होते हैं। फिर भी संपूर्ण भारत की महिलाओं की पोशाक में कुछ समानता का भाव उत्पन्न करती है।
4. भारत में वस्त्र एवं क्षेत्रीय विविधता के बीच गहरा संबंध है। गर्म क्षेत्रों में सूती हल्के कपड़े, ठंडे क्षेत्रों में ऊनी गरम कपड़े, पहाड़ी क्षेत्रों में लम्बे कपड़े तथा रेगिस्तान क्षेत्रों में मोटे कपड़े की पगड़ी आदि क्षेत्रीय विविधता एवं वस्त्रों के बीच संबंध को प्रदर्शित करते हैं।
5. भारत की सांस्कृतिक समृद्धि में त्यौहारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। ये भारत की सदियों पुरानी परंपराओं, रीति रिवाजों और कलाओं का संरक्षण करते हैं, जैसे दीपावली पर रंगोली, दुर्गापूजा में मूर्तिकला, बीहू में लोक नृत्य आदि।
6. पंचतंत्र संस्कृत में लिखी गई कहानियों का संग्रह है जिनके माध्यम से जीवन, ज्ञान और नैतिकता के बारे में जानवरों को पात्र मानकर समझाया गया है। लगभग 2200 वर्ष पूर्व लिखी गयी ये कहानियाँ लगभग हर भारतीय भाषा में अनुवाद हुई हैं। इस प्रकार पंचतंत्र का भारतीय साहित्य में बड़ा योगदान है।
7. भारतीय संस्कृति के आधार स्तंभ हैं— न्याय, करुणा, कर्त्तव्य पालन, वीरता, धैर्य, सत्य की रक्षा, धर्म का आचरण आदि। रामायण एवं महाभारत के नायकों द्वारा इन्हीं तत्वों की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष किया। इस प्रकार इन दो महाकाव्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूलतत्व बहुत मजबूत हुए और जनमानस के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रदान किए।
8. 'पीपल ऑफ इंडिया' प्रोजेक्ट भारत के मानवशास्त्र सर्वेक्षण विभाग द्वारा संपन्न किया गया एक कार्यक्रम था जिसने 20वीं शताब्दी के अंत में यह जानकारी प्रदान की कि भारत में लगभग 325 भाषाऐं बोली जाती हैं तथा लगभग 25 प्रकार की लिपियों का प्रयोग होता है।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. भारत की विविधता, उसकी सबसे आकर्षक सुंदरता है, लेकिन साथ ही यह विविधता कुछ चुनौतियां भी उत्पन्न करती हैं। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और जातियों का घर है जो इसे अनेक प्रकार के फूलों से भरे गुलदस्ते जैसा बनाता है लेकिन इन विविधताओं के कारण कुछ सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक कठिनाइयाँ भी उत्पन्न होती हैं।

2. भारतीय भोजन कला में अनाज एवं मसालों का बड़ा महत्व है। भारत में गेहूँ, चावल, जौ, मक्का, दालें आदि अनाज भोजन के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इनके साथ ही कुछ मोटे अनाज जैसे- बाजरा, ज्वार, रागी आदि का प्रयोग भी भरपूर होता है। भोजन को स्वादिष्ट, सुपाच्य एवं सुगंधित बनाने के लिए हल्दी, जीरा, अदरक, इलायची आदि मसालों का प्रयोग किया जाता है। अनाज हमें ऊर्जा प्रदान करते हैं जबकि मसाले भोजन को स्वादिष्ट बनाते हैं।

3. भारतीय साड़ी एकता और विविधता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह न केवल एक पारंपरिक परिधान है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक पहचान और समृद्ध विरासत का प्रतीक भी है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पहने जाने वाली साड़ी के बनाने, पहनने तथा डिजाइन करने के विविध तरीके इसकी विविधता को प्रकट करते हैं तथा भारत की विविध संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, फिर भी साड़ी संपूर्ण भारत की नारियों की एक सामूहिक पहचान का प्रतीक है।

4. भारतीय त्यौहारों में क्षेत्रीय विविधता एवं राष्ट्रीय एकता की भावना का सुंदर समावेश है। भारत के हर क्षेत्र के अपने विशिष्ट त्यौहार होते हैं जो उस क्षेत्र की संस्कृति, जलवायु, कृषि आदि से भी संबंधित होते हैं, जैसे- दक्षिण भारत में पोंगल, ओणम आदि तथा उत्तर भारत में दीपावली, होली, दशहरा आदि। पूर्वी भारत में दुर्गा पूजा एवं छठ पूजा आदि। इन सब त्यौहारों की क्षेत्रीय विविधता के बावजूद यह देखा जाता है कि भारत के सभी लोग अन्य क्षेत्रीय त्यौहारों को भी उतना ही आदर और सम्मान देते हैं, जितना अपने क्षेत्रीय त्यौहार को। यह भारत की राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रतीक है।

5. रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के दो ऐसे ग्रंथ हैं जो सदियों से भारतीय जनता के नैतिक और दार्शनिक चिंतन को प्रभावित करते चले आ रहे हैं। ये केवल इतिहास ही नहीं है, बल्कि जीवन जीने की कला, आदर्शों और सिद्धांतों की शिक्षा देने वाले अद्वितीय ग्रंथ हैं। दोनों ग्रंथों में धर्म का सर्वोच्च स्थान दिया गया है तथा ये बताया गया है कि अंततः धर्म की ही विजय होती है। दोनों ही ग्रंथों में कर्त्तव्यपालन एवं कर्मफल व्यवस्था का स्पष्ट दिग्दर्शन किया गया है एवं न्याय के लिए संघर्ष करने का संदेश दिया गया है। दोनों ही ग्रंथ पारिवारिक आदर्शों के पालन से होने वाले लाभ एवं उनके उल्लंघन से होने वाली हानियों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

J. मानचित्र कार्य —

1. भारत के रूपरेखा मानचित्र पर अनाज/दालों के क्षेत्र

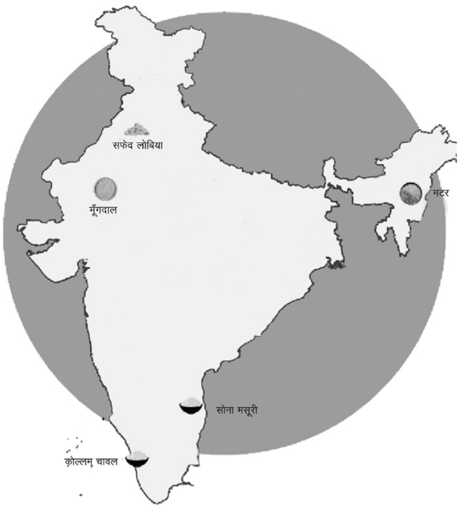

2. भारत में एक ही तारीख पर मनाए जाने वाले समान त्यौहार

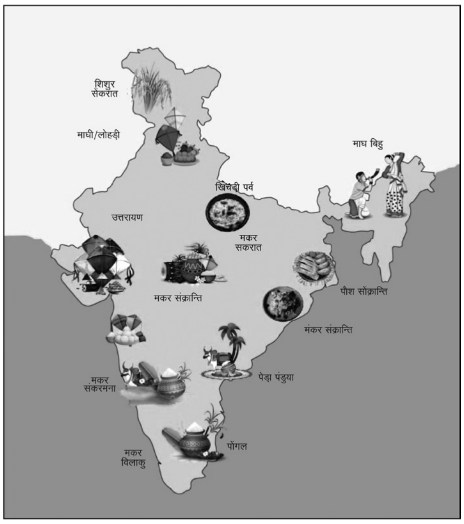

पाठ—9

परिवार और समुदाय

NCERT प्रश्न

1. मैं अपने परिवार के और पास-पड़ोस के बहुत से नियमों का पालन करता हूँ—

यथा— (i) स्वच्छता का ध्यान रखना,

(ii) अनुशासन बनाये रखना

(iii) असहाय लोगों की सहायता करना

(iv) बड़ों की आज्ञा मानना

(v) अपना काम स्वयं करना आदि।

नियमों का पालन इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यदि इन नियमों का पालन नहीं किया जायेगा तो परिवार व पड़ोस की एकता, आपसी सहयोग, प्रेम की भावना, स्वच्छता रूपी दशायें तहस-नहस हो जायेंगी।

2. हाँ कभी-कभी ऐसा लगता है यथा—माता, दादी, बहन को पारिवारिक निर्णय लेने में पर्याप्त महत्त्व न देना।

बालिकाओं को शिक्षा के पर्याप्त अवसर न देना।

पुत्र को समाज में प्रधान मानना।

कन्या शिशु हत्या व दहेज रूपी प्रक्रिया।

गरीबों/वंचितों को समान अवसर नहीं देना आदि।

3. समुदाय का सहयोग हमेशा लाभ प्रदान करता है इसके कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं—

(i) समुदाय के लोग आपसी सहयोग द्वारा कचरे का उचित निस्तारण करके स्वच्छ वातावरण रखने में मदद करते हैं।

(ii) आपसी आर्थिक सहयोग से कालोनी/गाँव में जल निकास, विद्युत व्यवस्था को सुचारु रखा जा सकता है।

(iii) पर्यावरण प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

(iv) जल संरक्षण किया जा सकता है।

(v) स्वयं सहायता समूह बनाकर लोगों की आपसी मदद की जा सकती है।

(vi) आपसी सामंजस्य बनाकर सुख-दुख में मदद की जा सकती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – ब, 2 – ब, 3 – स, 4 – ब, 5 – ब, 6 – स, 7 – ब, 8 – ब, 9 – ब, 10 – ब, 11 – ब, 12 – ब, 13 – ब, 14 – ब, 15 – स।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – सभी, 2 – NSS, NCC एवं विज्ञान क्लब, 3 – प्रेम और सहयोग, 4 – हलमा, 5 – निवासी कल्याण संघ।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – असत्य, 4 – असत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – ब, 2 – अ, 3 – य, 4 – स, 5 – द

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (द), 2 – (स)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – ब, 2 – अ, 3 – ब

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. एक परिवार एक छोटा परिवार होता है जिसमें माता-पिता और उनके बच्चों तक सीमित होता है।
2. परिवार में सहयोग का मुख्य सिद्धांत या लक्ष्य है मिलकर कार्यों को पूरा करना।
3. भारतीय परिवारों में दान देना धर्म कार्य माना जाता है।
4. मन, वचन तथा कर्म से किसी भी प्राणी को हानि न पहुँचाना अहिंसा कहलाती है।
5. ओणम त्यौहार की चर्चा शालिनी के परिवार की कहानी में हैं।
6. भील समुदाय
7. जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे परिवार में धीरे-धीरे जिम्मेदारियाँ निभाना सीखते हैं।
8. पारिवारिक मूल्यों में सेवा का अर्थ है परिवार के सदस्यों के प्रति निस्वार्थ भाव से कार्य करना।
9. तेनजिंग के परिवार में घरेलू कार्यों में तेनजिंग के पिता मदद करते हैं।
10. निवासी कल्याण मंच (RWA) का मुख्य कार्य अपने आस-पास के क्षेत्र को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखना है।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. 1. संयुक्त परिवार बड़ा होता है जबकि एकल परिवार छोटा होता है।

2. संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं जबकि एकल परिवार में केवल माता-पिता और उनके बच्चो (दो पीढ़ियाँ) एक साथ रहते हैं।

2. परिवार में बच्चों की अनेक जिम्मेदारियाँ होती है। जैसे- अपनी पढ़ाई करना, घर के कार्यों में परिवार के सदस्यों का सहयोग करना तथा अपने से बड़ों का सम्मान करना आदि।

3. ओणम के दौरान शालिनी के परिवार ने अपने चाचा के सभी परिवारीजनों के लिए नये कपड़े दिलाए। इस प्रकार आर्थिक संकट से उन्हें संभाला।

4. भारतीय पारिवारिक जीवन में धर्म के सिद्धांत व्यापक होते हैं। दान, सेवा, परहित, सत्याचरण, अहिंसा आदि धर्म के मूल तत्व भारतीय परिवारों में बचपन से ही सिखा दिए जाते हैं।

5. भारतीय परिवारों में दादा, दादी, मार्गदर्शक, शिक्षक और संरखक की भूमिका निभाते हैं। वे बच्चों के अपने अनुभव बताते हैं। सही गलत में अंतर करना बताते हैं तथा पारिवारिक मूल्यों, परंपराओं और रीति रिवाजों से अवगत कराते हैं।

6. समुदायों की उत्पत्ति ही आपसी निर्भरता के कारण होती है। कोई एक व्यक्ति या परिवार अपने सभी कार्य अकेले नहीं कर सकता। अनेक कार्य एक-दूसरे के सहयोग से होते हैं तथा आपसी संसाधनों को साझा करने से होते हैं।

7. मध्यप्रदेश के झाबुआ में भील समुदाय ने जलसंकट को हल किया। उन्होंने 'हलमा' की अपनी पारंपरिक प्रथा को अपनाया, हजारों पेड़ लगाए, वर्षा जल संरक्षण के लिए खाइयाँ खोदी। और ये सब उन्होंने बिना किसी धन के, सेवाभाव से निस्वार्थपूर्वक किया।

8. अहमदाबाद में ऑटो-वर्कशॉप के मालिक कमल परमार ने अपने आस-पास के बच्चों को बिना शिक्षा के संघर्ष करते हुए देखा तो उन्होंने शाम को 5:30 बजे से 9:30 बजे तक निशुल्क शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया। उन्हें देखकर अन्य लोगों ने भी उनका सहयोग किया और एक बड़ी संख्या में बच्चे शिक्षित हो गये।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. भारतीय समाज में संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार की विशेषताओं को हम निम्न तुलनात्मक तथ्यों की सहायता से समझ सकते हैं।

(i) संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियाँ (दो से अधिक) एक छत के नीचे रहती हैं जबकि एकल परिवारों में मात्र दो पीढ़ियाँ (माता-पिता एवं बच्चे) ही होती हैं।

(ii) संयुक्त परिवार में बच्चों को दादा-दादी, चाचा-ताऊ आदि का प्यार एवं मार्गदर्शन भी मिलता है जो एकल परिवार में नहीं मिल पाता।

(iii) संयुक्त परिवार में बच्चे परंपराओं और रीतिरिवाजों का अच्छा ज्ञात प्राप्त करते हैं, लेकिन एकल परिवार में यह सुविधा प्राप्त नहीं होती।

(iv) संयुक्त परिवारों में सदस्यों के लिए निजी स्थान पर एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कमी रहती है, जबकि एकल परिवार में सदस्यों को निजी स्थान एवं स्वतंत्रता अधिक उपलब्ध होती है।

2. परिवार में सामंजस्य बनाए रखने में धर्म, सेवा और त्याग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। धर्म, परिवार के सदस्यों को सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करता है जिससे वे नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं। सेवा करने से परिवार के सदस्यों के बीच सहयोग एवं एकता की भावना उत्पन्न होती है तथा परिवार को सुखी एवं संतुष्ट रखने के लिए परिवार के सदस्यों में त्याग की भावना होना आवश्यक है। अपने व्यक्तिगत सुख को परिवार के अन्य सदस्यों के हित में त्याग करने से परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सद्भावना का प्रसार होता है।

3. शालिनी का परिवार एक संयुक्त परिवार था जिसमें शालिनी के माता-पिता, चाचा-चाची, उनकी बच्ची चिननी, शालिनी की दादी अचम्मा तथा शालिनी का छोटा भाईउ एक साथ रहते थे। शालिनी के पिता व्यवसायी तथा माता एक स्कूल शिक्षिका थीं।

किसी कारणवश, शालिनी के चाचा की नौकरी चली गई और उनके सामने आर्थिक संकट उपस्थित हो गया। जब ओण त्यौहार समीप आया तो शालिनी ने अपने लिए रेशम की ड्रेस खरीदने की योजना बनाई थी जो काफी महंगी होती है। लेकिन शालिनी के माता-पिता ने शालिनी सहित सभी के लिए शालिनी के चाचा, चाची एवं उनकी बच्ची को उनकी आर्थिक कठिनाई के समय में सहारा दिया। यह परिवार के सदस्यों द्वारा एक-दूसरे के लिए त्याग का उत्तम उदाहरण था। शालिनी को भी अपने माता-पिता का यह कार्य बहुत अच्छा लगा।

4. मेघालय निवासी तेनजिंग के परिवार में उसके माता-पिता एवं दादा-दारी एक साथ रहते हैं। तेनजिंग की माँ सहकारी संस्था में कार्य करती हैं तथा कार्य की अधिकता के कारण घर के कार्यों में अधिक समय नहीं दे पाती हैं। इस कारण घर के कुछ कार्य तेनजिंग की दादी संभालती हैं तथा तेजजिंग के पिता उनका सहयोग करते हैं। तेनजिंग के दादा तेनजिंग के गृहकार्य को करने में उसकी मदद करते हैं तथा वे समाज सेवा के कार्य भी करते हैं।

5. ग्रामीण समुदायों में आपसी निर्भरता—
ग्रामीण लोग आजीविका, सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं के लिए एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। यह निर्भरता कृषि कार्यों, पारंपरिक व्यवसायों जैसे कुम्हार, बढ़ई, लोहार आदि एवं सामाजिक कार्यक्रमों जैसे विवाह, धर्मानुष्ठान आदि में स्पष्ट दिखाई देती हैं। आर्थिक निर्भरता यथा पैसे का लेन-देन भी होता है।

शहरी समुदायों में आपसी निर्भरता— शहरी समुदायों में आपसी निर्भरता का एक जटिल जाल है। शहरी समुदाय व्यवसाय एवं उद्योगों में कार्य करने वाले लोगों का समूह है तथा ये भी एक-दूसरे पर आर्थिक रूप से निर्भर होते हैं। साथ ही शब्दों में 'निवासी कल्याण संघ' (RWAs) नाम के समुदाय विकसित हो रहे हैं जो आस-पास के वातावरण को स्वच्छ, शांत एवं सुरक्षित रखने के लिए कार्य करते हैं।

पाठ—10

आधारभूत लोकतंत्र भाग-1 - शासन

NCERT प्रश्न

1. लोकतन्त्र का अर्थ—लोकतन्त्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है, जिसमें जनता स्वयं अपने शासक चुनती है और अपने हितों की रक्षा के लिए नीतियाँ बनवाती है। यह शब्द दो संस्कृतियों से बना है—
- 'लोक', जिसका अर्थ है—जनता।
- 'तन्त्र', जिसका अर्थ है—शासन प्रणाली।

इस प्रकार, इसका अर्थ है—'जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का शासन।'

प्रत्यक्ष व प्रतिनिधि लोकतन्त्र में अन्तर—
प्रतिनिधि लोकतन्त्र—लोकतन्त्र का ऐसा रूप है जिसमें नागरिक अपने प्रतिनिधियों को चुनते हैं जो उनके लिए निर्णय लेते हैं और कानून बनाते हैं जबकि प्रत्यक्ष लोकतन्त्र का ऐसा रूप है जिसमें सभी नागरिक सीधे निर्णय प्रक्रिया में भाग लेते हैं न कि चुने गए प्रतिनिधियों के माध्यम से।

2. सरकार के तीन अंग हैं—विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका।

भूमिका—(i) विधायिका—सरकार का वह अंग जो कानून बनाता है। भारत में इसमें लोकसभा और राज्यसभा राष्ट्रीय स्तर पर और विधान सभा राज्य स्तर पर शामिल होते हैं।

(ii) कार्यपालिका— यह विधायिका द्वारा बनाये गये कानूनों को लागू करने का कार्य करती है। इसमें राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री व सरकारी विभाग व एजेंसियाँ शामिल हैं।

(iii) न्यायपालिका—यह कानूनों की व्याख्या करके न्याय दिलाने/प्रदान करने का कार्य करती है। यह निष्पक्ष व न्यायसंगत कानूनों व कार्य का निर्धारण करती है।

3. भारत एक विशाल आकार व जनसंख्या वाला देश है, जिसे एक स्तरीय सरकार द्वारा नियन्त्रित व संचालित करना एक दुष्कर कार्य है। निर्धारित कानूनों को लागू करने के लिए शीर्ष स्तरीय सरकार पूरी तरह सार्थक नहीं हो सकती है। जनसंख्या की आवश्यकताएँ भी अलग-अलग हैं तथा समस्याएँ भी भिन्न-भिन्न हैं। इसी कारण अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग जिम्मेदारियाँ निर्धारित करने, कानून के क्रियान्वयन के लिए भारत में त्रिस्तरीय सरकार की आवश्यकता है।

4. 2019 की कोविड महामारी मुझे अच्छी तरह याद है। इस महामारी को सँभालने में भारत की सरकार के तीनों स्तरों ने अपना योगदान दिया था। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार व स्थानीय सरकारों की प्रतिभागिता ने ही इस भयंकर बीमारी को भारत जैसे विकासशील, अधिक जनसंख्या वाले देश में अधिक भयावह नहीं बनने दिया।

सरकारों द्वारा उठाये गये कदम—
1. लोगों की आवाजाही व समूह बनाने पर रोक।
2. शिक्षण संस्थानों का अवकाश।

3. उद्योगों को कुछ समय के लिए बन्द करना।
4. सोशल दूरी (डिस्टेंस) बनाये रखना।
5. आवश्यक रूप से मास्क प्रयोग।
6. सरकारी निर्देशों का पालन करना।
7. प्रत्येक स्तर द्वारा जिम्मेदारी का निर्वहन करना।

इसमें केन्द्र सरकार ने आवश्यक नियम बनाये व दिशा- निर्देश जारी किये, जिन्हें सभी राज्यों ने अपनी जनसंख्या पर लागू किया तथा स्थानीय सरकारों ने अपने स्तर पर कानूनों के तहत लोगों की गतिविधियों व निर्देशों के पालन को सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभायी थी।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – ब, 2 – स, 3 – स, 4 – ब, 5 – ब, 6 – स, 7 – ब, 8 – स, 9 – ब, 10 – स, 11 – ब, 12 – ब, 13 – ब, 14 – स, 15 – ब।

B. रिक्त स्थान भरें —

1–प्रतिनिधि, 2–लोकतंत्र, 3–शक्ति का विभाजन, 4 – विधायिका, 5 – राष्ट्रीय सुरक्षा।

C. सत्य/असत्य

1 – सत्य, 2 – असत्य, 3 – असत्य, 4 – असत्य, 5 – असत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – य, 2 – अ, 3 – द, 4 – स, 5 – ब

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (स), 2 – (स)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – ब, 2 – स, 3 – स

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके किए जाने वाले अपराध साइबर अपराध कहलाते हैं।
2. भारत में कानून बनाने की जिम्मेदारी विधायिका की है।
3. कार्यपालिका की मुख्य भूमिका कानून को लागू करना है।
4. 'सत्यमेव जयते' का अर्थ है- सत्य की ही विजय होती है।
5. भारत सरकार की तीन शाखाऐं हैं- 1. विधायिका, 2. कार्यपालिका, 3. न्यायपालिका।
6. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत में मिसाइल मैन के नाम से जाने जाते हैं।
7. भारत में न्यायपालिका का कार्य कानून की व्याख्या करना एवं सभी के लिए न्याय सुनिश्चित करना है।
8. 'लोकतंत्र' शब्द का अर्थ है 'जनता का शासन'।
9. भारत में केन्द्र सरकार का कार्यकारी प्रमुख प्रधानमंत्री होता है।
10. स्थानीय सरकार का मुख्य कार्य गाँवों, कस्बों एवं शहरों की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे- सड़क, बिजली, पानी, सफाई आदि की व्यवस्था करना है।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. शासन में शक्ति के विभाजन का अर्थ है सरकार के कार्यों को विभिन्न अंगों में बाँट देना जिससे कोई भी एक अंग बहुत शक्तिशाली न हो और सत्ता के दुरुपयोग से बचा जा सके।
2. न्यायपालिका कानूनों की समीक्षा करती है और यदि कोई कानून उसे पक्षपात पूर्ण गता है तो वह उसे रद्द करके या उस पर रोक लगाकर निष्पक्षता को सुनिश्चित करती है।
3. साइबर अपराध सरकार के लिए एक नई चुनौती बन गया है तथा इनसे निपटने के लिए सरकार को नए कानून एवं नीतियां बनानी पड़ी हैं। इन अपराधों का पता लगाने, संभावित खतरों को रोकने एवं गोपनीय डेटा को सुरक्षित रखने के लिए सरकारी एजेंसियों को प्रशिक्षित एवं आधुनिक तकनीक तथा उपकरणों से सुसज्जित किया जा रहा है।
4. भारत सरकार के तीन स्तर एवं उनके कार्य निम्न हैं —
   1. स्थानीय सरकार — यह सबसे छोटा स्तर है जो गाँव, कस्बा या शहर स्तर पर होता है तथा सड़क, बिजली, पानी, सफाई आदि की व्यवस्था को सुनिश्चित करना इसका कार्य है।
   2. राज्य सरकार — यह राज्य स्तर पर कार्य करती है तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि एवं राज्य की कानून, व्यवस्था संभालना इसका कार्य है।
   3. केन्द्र सरकार — यह सरकार का सर्वोच्च स्तर है तथा देश की सुरक्षा, विदेशी नीति एवं राष्ट्रीय नीतियों का निर्धारण इसका प्रमुख कार्य है।
5. राज्य सरकार की निम्नलिखित जिम्मेदारियाँ होती हैं-
   (i) राज्य में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना।
   (ii) स्कूल, कॉलेजों में शिक्षा व्यवस्था की देखरेख करना।

(iii) राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं का प्रबंधन करना।
(iv) राज्य में कृषि क्षेत्र के विकास के लिए प्रयत्न करना।
(v) राज्य के लिए बजट बनाना।
(vi) राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाऐं बनाना।

6. कानून का लचीला और परिवर्तनशील होना इसलिए आवश्यक है जिससे समय के साथ होने वाले सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी बदलावों के अनुरूप कानून बनाए जा सकें।

7. सांसद (MP) वह व्यक्ति होता है जो जनता द्वारा निर्वाचित होकर संसद में उनके प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है। सांसद विधायिका द्वारा कानून बनाने एवं अपने क्षेत्र की समस्याओं को सदन में रखने का कार्य करता है।

8. जमीनी स्तर का लोकतंत्र (Grassroots Democracy) एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें नागरिक स्थानीय मुद्दों और नीतियों पर सीधे अपनी बात रख सकते हैं। भारत में पंचायती राजव्यवस्था जमीन स्तर के लोकतंत्र का उदाहरण है।

I. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

1. भारत सरकार की तीन शाखाओं की भूमिका एवं कार्य

(i) विधायिका (Legislature) — इसके प्रमुख कार्य कानून बनाना, सरकार पर निगरानी रखना, बजट पारित करना, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार विमर्श करना एवं जनता की मांगों एवं चिंताओं को सरकार तक पहुँचाना है।

(ii) कार्यपालिका (Executure) — इसके प्रमुख कार्य विधायिका द्वारा बनाए गये कानूनों को लागू करना, प्रशासन चलाना, सार्वजनिक सेवाऐं प्रदान करना, देश की सुरक्षा सुनिश्चित करना, विदेश नीति का संचालन करना आदि है। प्रधानमंत्री कार्यपालिका का प्रमुख होता है।

(iii) न्यायपालिका (Judiciary) — इसके प्रमुख कार्य कानून की व्याख्या करना, विवादों का निपटारा करना, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना और संविधान का संरक्षण करना है।

2. बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा के समय स्थानीय, राज्य एवं केन्द्र सरकारें मिलकर कार्य करती हैं। स्थानीय सरकारें जैसे नगरपालिका, पंचायतें, आपदा के तुरंत बाद बचाव और राहत कार्यों में सबसे आगे होती हैं। राज्य सरकारें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंन्सियों से वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान करती हैं तथा आवश्यकता होने पर सेना को भी राहत कार्य में लगाती है।

3. लोकतंत्र में कानून बनाने, लागू करने और व्याख्या करने की प्रक्रियाऐं सरकार के विभिन्न अंगों के बीच शक्तियों के विभाजन के सिद्धांत पर आधारित होती है। विधायिका कानून बनाती है, संसद में जन प्रतिनिधि कानून का मसौदा तैयार करते हैं। उस पर बहस होती है तथा मतदान होता है और यदि बहुमत कानून के पक्ष में होता है तो वह पारित हो जाता है।

कार्यपालिका, जिसका कार्यकारी प्रधान, प्रधानमंत्री होता है, वह अपने मंत्रिमंडल की सहायता से उस पारित कानून को देश में लागू करता है। न्यायपालिका यह सुनिश्चित करती है कि बनाया गया कानून संविधान के उद्देश्यों एवं प्रावधानों के अनुरूप हो या नहीं।

4. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का भारत के लिए योगदान

पाठ—11

आधारभूत लोकतंत्र भाग-2 - ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय सरकार

NCERT प्रश्न

1. हाँ पाठ को देखे बिना मैं पंचायती राज व्यवस्था के तीन स्तर बता सकता हूँ—

(i) जिला परिषद्/जिला स्तर
(ii) पंचायत समिति/उपखण्ड स्तर
(iii) ग्राम पंचायत/ग्राम स्तर

जिला परिषद्—यह सम्पूर्ण जिले के विकास व समस्याओं के निदान सम्बन्धी कार्यों को क्रियान्वित करती है।

पंचायत समिति—यह उपखण्ड स्तरीय ग्राम पंचायतों व जिला परिषद के बीच एक कड़ी का कार्य करती है। यह पंचायत समिति स्तर पर योजनाओं का निर्धारण करती है।

ग्राम पंचायत—यह पंचायती राज्य का निम्नतम स्तर है, जो गाँवों के विकास की योजना बनाती है। यह स्थानीय शासी निकाय है।

2. श्रीमान सरपंच महोदय
ग्राम पंचायत पण्डितपुरा
जिला दौसा

विषय—प्लास्टिक कचरे के निस्तारण के क्रम में।

श्रीमान सरपंच जी आप हमारी पंचायत के एक कर्मठ नेता हैं। आपकी पंचायत के ग्राम हरनाथपुरा में सड़क के दोनों ओर दैनिक उपयोग के पश्चात् बड़ी मात्रा में प्लास्टिक थैलियों का जमावड़ा देखने को मिल रहा है। ये प्लास्टिक थैलियाँ पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल नहीं हैं, साथ ही इन्हें खाकर बेजुबान आवारा पशु विशेषत: गाय आदि को अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ रहा है।

अत: आपसे आग्रह है कि प्लास्टिक थैलियों के एकत्रण व निपटान की उचित व्यवस्था करवाने का कष्ट करें ताकि ग्रामीणों को प्रदूषण सम्बन्धी दशाओं से बचाया जा सके व जीवों की रक्षा की जा सके।

समस्त ग्रामवासी
हरनाथपुरा

3. ग्राम पंचायत के सदस्य का चुनाव सम्बन्धित पंचायत के वयस्क मतदाताओं द्वारा किया जाता है। सामान्य सम्बन्धित पंचायत में निवास करने वाला व्यक्ति जो आपराधिक प्रवृत्ति का न हो, सभी को साथ लेकर चलने वाला हो, निष्पक्ष व न्यायसंगत कार्य करे, पंचायत का चहुमुखी विकास करने की क्षमता रखे, उसे पंचायत का सदस्य बनाना चाहिए।

4. ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम विद्यार्थियों को अपने प्रधानाध्यापक को प्रार्थना पत्र देना चाहिए तत्पश्चात गाँव के सरपंच को उससे अवगत कराना चाहिए। सड़क का मामला राजमार्ग का है। अत: इस समस्या का समाधान भी जिला परिषद व राज्य स्तर का अधिक बनता है। ऐसी स्थिति में ग्रामीणों, सरपंच के साथ उपखण्ड अधिकारी, जिला कलेक्टर को ज्ञापन देकर समस्या का निदान करने के लिए कहना चाहिए ताकि ट्रैफिक लाइट (सिग्नल) या अण्डरपास जैसी सुविधा प्रदान की जा सके।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – अ, 2 – ब, 3 – द, 4 – स, 5 – द, 6 – स, 7 – द, 8 – अ, 9 – ब, 10 – स, 11 – ब, 12 – ब, 13 – अ, 14 – ब।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – सरपंच या प्रधान, 2 – तारंगल, 3 – गाँवों 4 – महिलाओं, 5 – प्रत्येक 10।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – असत्य, 3 – सत्य, 4 – असत्य, 5 – असत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – य, 2 – अ, 3 – ब, 4 – स, 5 – द

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (स), 2 – (अ)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – ब, 2 – ब, 3 – स

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. गाँव में सरपंच का कार्य गाँव को नेतृत्व करना होता है।

2. पंचायत सचिव ग्राम पंचायत को प्रशासनिक कार्यों में सहायता करता है।

3. गाँव में भूमि रिकॉर्ड बनाने का कार्य पटवारी करता है।

4. ग्राम सभा में गाँव के सभी नागरिक शामिल होते हैं।

5. पंचायती राज प्रणाली में तीन स्तर होते हैं।

6. ग्राम पंचायत के कार्यों का प्रबंधन ग्राम पंचायत सचिव और ग्राम सरपंच द्वारा किया जाता है।

7. बाल मित्र पंचायत पहल का उद्देश्य बच्चों को स्थानीय शासन में भागीदारी का अवसर देना है।

8. पंचायती राज प्रणाली में जिला स्तर पर जिला परिषद कार्य करती है।

9. बाल पंचायत का कार्य बच्चों को अपनी राय व्यक्त करने में मदद करना है।

10. पोपटराव पवार ने लंबे समय से सूखे और खराब कृषि उत्पादन वाले हिवरे बाजार गाँव को हरा-भरा एवं आदर्श गाँव बना दिया।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. ग्राम पंचायत की मुख्य जिम्मेदारियाँ लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करना और विकास संबंधी योजनाएँ जमीनी स्तर पर पहुँचाना है।

2. पटवारी ग्रामीणों के भूमि से संबंधित अभिलेखों का प्रबंधन करता है। कई क्षेत्रों में पटवारी गाँव की भूमि के ऐतिहासिक नक्शे भी रखता है।

3. बाल-मित्र पंचायत ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को अपनी राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है एवं उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य को प्राथमिकता देती है।

4. पंचायत समिति का ग्रामीण शासन में मुख्य कार्य विभिन्न गाँवों के बीच समन्वय स्थापित करना है।

5. जिला परिषद यह सुनिश्चित करती है कि संसाधन सही तरीके सक और समान रूप से वितरित हों और जिला व्यापी मुद्दों का समाधान हो।
6. पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी ग्रामीण शासन में लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में प्रगति दिखाती है।
7. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना एक ऐसी योजना है जो ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ष भर उपयोग करने योग्य सड़कें बनाने पर केंद्रित है। अत: ये ग्रामीण बुनियादी ढाँचे में सुधार करती है।
8. पंचायती राज प्रणाली, सत्ता का विकेंद्रीकरण करती है, जिससे स्थानीय लोगों को अपने क्षेत्र के विकास के लिए निर्णय लेने की अधिक शक्ति मिलती है।

I. दीर्घउत्तरीय प्रश्न —

1. भारत में पंचायती राज प्रणाली की संरचना और कार्यप्रणाली

संरचना (Structure)— पंचायती राज प्रणाली की संरचना त्रि-स्तरीय है, जिसका अर्थ है कि यह तीन स्तरों पर कार्य करती है :

- **ग्राम स्तर** (Gram Level) : ग्राम पंचायत (Gram Panchayat)
  - यह सबसे निचला स्तर है और इसमें एक या एक से अधिक गाँव शामिल हो सकते हैं।
  - ग्राम पंचायत का मुखिया सरपंच या प्रधान होता है, जिसका चुनाव सीधे गाँव के मतदाताओं के द्वारा किया जाता है।
  - ग्राम पंचायत में वार्ड सदस्य भी होते हैं, जो अपने-अपने वार्डों से चुने जाते हैं।
  - यह गाँव के विकास, स्वच्छता, पानी, सड़कों और स्थानीय जरूरतों के लिए जिम्मेदार होती है।
- **ब्लॉक/मध्यवर्ती स्तर (Block/Intermediate Level) : पंचायत समिति (Panchayat Samiti)**
  - यह ब्लॉक स्तर पर कार्य करती है और इसमें कई ग्राम पंचायतें शामिल होती हैं।
  - पंचायत समिति के सदस्यों का चुनाव सीधे मतदाताओं द्वारा किया जाता है, और इसके प्रमुख को प्रमुख या अध्यक्ष कहा जाता है।
  - यह ग्राम पंचायतों और जिला परिषद के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है।
  - यह विभिन्न सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन और ग्राम पंचायतों को वित्तीय सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- **जिला स्तर** (District Level) : जिला परिषद (Zila Parishad)
  - यह पंचायती राज प्रणाली का उच्चतम स्तर है और यह जिले के ग्रामीण क्षेत्रों को कवर करती है।
  - जिला परिषद के सदस्य सीधे चुने जाते हैं, और इसके प्रमुख को अध्यक्ष या सभापति कहा जाता है। इसमें कुछ पदेन सदस्य (जैसे लोकसभा और विधानसभा के सदस्य) भी होते हैं।
  - यह जिले के विकासात्मक योजनाओं की निगरानी और समन्वय करती है।
  - यह पंचायत समितियों और ग्राम पंचायतों को मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

कार्यप्रणाली (Functioning) : पंचायती राज प्रणाली की कार्यप्रणाली निम्नलिखित मुख्य सिद्धांतों पर आधारित है :

- **चुनाव** (Elections) :
  - प्रत्येक पाँच वर्ष में तीनों स्तरों पर नियमित चुनाव होते हैं।
  - राज्यों के राज्य चुनाव आयोग इन चुनावों का संचालन करते हैं।
  - अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के लिए सीटों का आरक्षण अनिवार्य है। महिलाओं के लिए कम से कम एक-तिहाई सीटें आरक्षित हैं।
- **वित्त** (Finance) :
  - ग्राम पंचायतें, पंचायत समितियाँ और जिला परिषदें अपने कार्यों के लिए विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त करती हैं।
  - इनमें राज्य सरकारों से अनुदान, स्थानीय करों की वसूली (जैसे संपत्ति कर), और केंद्रीय योजनाओं के तहत प्राप्त धन शामिल हैं।
- **शक्तियाँ और उत्तरदायित्व** (Powers and Responsibilities) :
  - इनमें कृषि, ग्रामीण आवास, पेयजल, सड़कें, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता, महिला एवं बाल विकास, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम आदि शामिल हैं। पंचायतों को इन क्षेत्रों में योजनाएँ बनाने और उन्हें लागू करने का अधिकार है।

- **ग्राम सभा** (Gram Sabha) :
  - प्रत्येक ग्राम पंचायत के अंतर्गत एक ग्राम सभा होती है, जिसमें उस ग्राम पंचायत क्षेत्र के सभी पंजीकृत मतदाता शामिल होते हैं।
  - यह पंचायती राज प्रणाली का आधार है और इसे गाँव की विधायिका के रूप में देखा जा सकता है।
    ग्राम सभा की बैठकें नियमित रूप से होती हैं, जहाँ ग्राम पंचायत के बजट, विकास योजनाओं और पिछले कार्यों की समीक्षा की जाती है। यह पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने में मदद करती है।

2. पंचायती राज प्रणाली में ग्राम सभा का महत्व

- **सीधा लोकतंत्र** (Direct Democracy) — ग्राम सभा सीधे लोकतंत्र का एक अनुपत उदाहरण है। गाँव के सभी पंजीकृत मतदाता इसके सदस्य होते हैं। ये सदस्य सीधे तोर पर गाँव के विकास, योजनाओं और बजट पर चर्चा करते हैं, निर्णय लेत हैं, निर्णय लेते हैं और ग्राम पंचायत के कार्यों की समीक्षा करते हैं।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही** (Transparency and Accountability) — ग्राम सभा की बैठकें ग्राम पंचायत के लिए एक जवाबदेही का मंच प्रदान करती हैं। ग्राम पंचायत को अपने पिछले कार्यों, खर्चों और प्रस्तावित योजनाओं का ब्यौरा ग्राम सभा के सामने प्रस्तुत करना होता है।
- **योजना निर्माण में भागीदारी** (Participation in Planning)— ग्राम सभा गाँव के विकास की योजनाओं को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गाँव की वास्तविक जरूरतें और प्राथमिकताएँ क्या हैं, यह गाँव के लोगों से बेहतर कोई नहीं जानता।
- **सामाजिक न्याय को बढ़ावा** (Promotion of Social Justice)— ग्राम सभा समाज के सभी वर्गों, विशेषकर कमजोर और हाशिए पर पड़े लोगों, जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं को अपनी बात रखने और निर्णय प्रक्रियाओं में शामिल होने का अवसर देती है।
- **विवादों का निपटारा** (Dispute Resolution)— कई बार ग्राम सभाएं गाँव स्तर पर छोटे-मोटे विवादों को सुलझाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आपसी सहमति और चर्चा के माध्यम से, यह गाँव में शांति और सद्भाव बनाए रखने में मदद करती है।
- **निगरानी और मूल्यांकन** (Monitoring and evaluation)— ग्राम सभा न केवल योजनाओं को बनाने में मदद करती है, बल्कि यह उनके कार्यान्वयन की निगरानी और मूल्यांकन भी करती है। ग्रामीण देख सकते हैं कि योजनाएँ ठीक से लागू हो रही है या नहीं, और यदि कोई समस्या है तो उसे ग्राम सभा में उठा सकते हैं।
  संक्षेप में, ग्राम सभा पंचायती राज प्रणाली की आत्मा है।

3. पोपटराव पवार और हिवरे बाजार : ग्रामीण विकास की एक संक्षिप्त गाथा

पोपटराव पवान ने 1990 के दशक में महाराष्ट्र के हिवरे बाजार गाँव को सूखे और गरीबी से उबारा और इसे एक आत्मनिर्भर 'आदर्श गाँव' में बदल दिया।

प्रमुख उपलब्धियाँ और परिवर्तन:

- **जल संरक्षण :** व्यापक वाटरशेड विकास (चैक डैम, परकोलेशन टैंक) और पानी के न्यायसंगत उपयोग (कम पानी वाली फसलों को बढ़ावा, गन्ना पर प्रतिबंध) से भूजल स्तर में भारी वृद्धि हुई।
- **कृषि विकास :** पानी की उपलब्धता बढ़ने से जैविक और सूखा-प्रतिरोधी खेती को बढ़ावा मिला, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ी। पशुधन विकास (दूध उत्पादन) भी आय का प्रमुख स्रोत बना।
- **सामाजिक सशक्तिकरण :** ग्राम सभा को सर्वोच्च निर्णय लेने का अधिकार देकर सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित की गई। शराबबंदी, परिवार नियोजन और खुले में शौच मुक्त जैसी सामाजिक पहल सफलतापूर्वक लागू की गई।
- **आर्थिक समृद्धि :** इन प्रयासों से प्रति व्यक्ति आय में नाटकीय वृद्धि हुई, गाँव में अब 80 से अधिक करोड़पति परिवार हैं और कोई भी गरीबी रेखा से नीचे नहीं है।

ग्रामीण विकास पर प्रभाव :

- **आत्मनिर्भरता :** गाँव पानी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना।
- **पर्यावरणीय स्थिरता :** जल संरक्षण और जैविक खेती से पर्यावरण पुनर्जीवित हुआ।
- **सामाजिक समरसता :** सामुदायिक भागीदारी ने सशक्तिकरण और सामाजिक सद्भाव को बढाया।
- **बेहतर जीवन स्तर :** गरीबी उन्मूलन और

बेहतर सुविधाओं से जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ।

- **पलायन में कमी :** गाँव में बेहतर अवसरों के कारण शहरों की ओर पलायन रूका।
- **एक मॉडल का निर्माण :** हिवरे भारत पूरे भारत के लिए प्रेरणादायक ग्रामीण विकास मॉडल बन गया है, जो सामुदायिक भागीदारी और दूरदर्शी नेतृत्व की शक्ति को दर्शाता है।

पोपटराव पवार के नेतृत्व में हिवरे बाजार का transformation यह साबित करता है कि स्थानीय पहल और सशक्त समुदाय ग्रामीण भारत में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं।

4. पंचायती राज संस्थाओं में पिछड़े समूहों और महिलाओं की भागीदारी कैसे सुनिश्चित होती है?

पंचायती राज संस्थाएं (PRIs) भारत में पिछड़े समूहों (अनुसूचित जाति/जनजाति) और महिलाओं को स्थानीय शासन में सशक्त बनाने के लिए कई संवैधानिक प्रावधानों का उपयोग करती हैं।

मुख्य तरीके :

- सीटों का आरक्षण :
  - SC/ST : 73वें संशोधन अधिनियम, 1992 के तहत, पंचायती राज के तीनों स्तरों पर उनकी जनसंख्या के अनुपात में सीटें आरक्षित हैं।
  - **महिलाएँ :** महिलाओं के लिए कम से कम एक-तिहाई (1/3) सीटें आरक्षित हैं, जिसमें SC/ST महिलाओं के लिए भी आरक्षण शामिल हैं। कई राज्यों ने इसे 50% तक बढ़ा दिया है।
- **पदाधिकारों का आरक्षण:** सरपंच और अध्यक्ष जैसे प्रमुख पदों को भी SC/ST और महिलाओं के लिए रोटेशन के आधार पर आरक्षित किया गया है, ताकि उन्हें नेतृत्व का अवसर मिले।
- **ग्राम सभा का महत्व :** ग्राम सभा (गाँव के सभी पंजीकृत मतदाताओं की बैठक) सभी को, जिनमें पिछड़े वर्ग और महिलाएं भी शामिल हैं, सीधे अपनी बात रखने, योजनाओं पर चर्चा करने और पंचायत के कार्यों की निगरानी करने का मंच देती है।
- **क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण :** सरकार और NGOs द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि वे प्रभावी ढंग से काम कर सकें।
- **जागरूकता और लामबंदी :** विभिन्न अभियानों से इन समूहों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक और सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ये प्रावधान जमीनी स्तर पर सत्ता के विकेंद्रीकरण और समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण हैं, जिससे उनकी भागीदारी बढ़ी अै और वे अपने समुदायों के विकास में योगदान कर पा रहे हैं।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के अधिकारों और शिक्षा को बढ़ावा देने में बाल संसद की भूमिका

ग्रामीण क्षेत्रों में बाल संसद (चिल्ड्रन पार्लियामेंट) बच्चों के अधिकारों और शिक्षा को सशक्त करने का एक अत्यंत प्रभावी मंच है। यह बच्चों को लोकतंत्र और समस्या-समाधान का सीधा अनुभव देती है।

बाल ससंद क्या है?

यहाँ बच्चों द्वारा, बच्चों के लिए चलाई जाने वाली एक लाेकतांत्रिक संस्था है, जहाँ बच्चे अपने बीच से ही प्रधानमंत्री और अन्य मंत्रियों का चुनाव करते हैं। वे नियमित बैठकें करके अपने स्कूल या गाँव से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करते हैं और समाधान निकालते हैं।

बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देने में भूमिका:

- **अभिव्यक्ति और भागीदारी :** बाल संसद बच्चों को अपनी बात रखने और निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होने का सुरक्षित अवसर देती है, जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है।
- **भेदभाव और सुरक्षा :** यह समावेशी होती है और बच्चों को भेदभाव को पहचानने तथा बाल शोषण, बाल विवाह या बाल श्रम जैसे मुद्दों को उजागर करने में मदद करती है, ताकि उचित कार्यवाही हो सके।
- **सूचना का अधिकार :** बच्चे अपने अधिकारों और संबंधित योजनाओं के बारे में जानकारी जुटाना सीखते हैं।

शिक्षा को बढ़ावा देने में भूमिका :

- **नामांकन और उपस्थिति :** बाल संसद के सदस्य स्कूल न जाने वाले या अनुपस्थित रहने वाले बच्चों की पहचान कर उन्हें स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करते हैं।
- **शैक्षणिक गुणवत्ता और माहौल :** बच्चे सीखने के माहौल, बुनियादी सुविधाओं

और शिक्षकों के साथ रचनात्मक संवाद के लिए सुझाव देते हैं, जिससे शैक्षणिक गुणवत्ता सुधरती है।

- **जीवन कौशल विकास :** भागीदारी से बच्चों में नेतृत्व, निर्णय लेने, समस्या-समाधान और संचार जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल विकसित होते हैं।
- **बालिकाओं की शिक्षा :** यह बालिकाओं को स्कूल भेजने और उनकी शिक्षा जारी रखने के महत्व पर जोर देती है, तथा बाल विवाह जैसे मुद्दों का विरोध करती है।

पाठ—12

शहरी क्षेत्रों में स्थानीय सरकार

NCERT प्रश्न

1. ऐसी परिस्थिति में जल रिसाव वाले क्षेत्र की शासन इकाई अर्थात् शहरी/ग्रामीण जो भी लागू होती है, उसके अनुसार सूचना देने का कार्य करेंगे। यदि जल रिसाव का क्षेत्र शहरी शासन इकाई में आता है तो वहाँ के जलदाय विभाग को इसकी सूचना देंगे।
2. विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से किसी सदस्य को आमन्त्रित कर विभिन्न प्रश्न पूछें यथा—
   - आप अपने क्षेत्र के विकास के लिए क्या कर रहे हैं?
   - आपके क्षेत्र में जलापूर्ति व्यवस्था कैसी है?
   - आप जलापूर्ति सुविधा के विकास हेतु क्या करेंगे?
   - क्या आपके क्षेत्र में आपने किसी पुस्तकालय का प्रबन्ध किया है? यदि हाँ तो कहाँ पर व कैसे, यदि नहीं तो क्यों?
   - जल निकास हेतु आपने क्या प्रयास किये हैं?
   - क्या आपने अपने क्षेत्र में किसी उद्यान की स्थापना करवायी है?
3. विद्यार्थी परिवार व पड़ोसियों से चर्चा कर अपेक्षाओं की सूची तैयार करें यथा—
   - सड़क निर्माण होना चाहिए।
   - नालियों की व्यवस्था की जाए।
   - सीवर लाइन की व्यवस्था हो।
   - पर्याप्त जलापूर्ति की व्यवस्था हो।
   - उद्यान बनाया जाये।
   - पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध हो।
   - कचरा निस्तारण व्यवस्था की जाये आदि।
4. - नागरिकों को अपने समुदायों के प्रबन्धन में प्रत्यक्ष भाग लेने हेतु सशक्त बनाना।
   - सुशासन द्वारा लोक कल्याण को बढ़ावा देना।
   - सहभागी व सुलभ वातावरण प्रदान करना।
   - कचरा संग्रहण व निस्तारण की व्यवस्था करना।
   - शहर को स्वच्छ प्रदूषण मुक्त रखने के प्रयास करना।
   - सार्वजनिक सुविधा प्रदान करना व उनकी देखभाल करना।
   - सरकारी योजनाओं को निष्पक्ष संचालित करना।
   - आधारभूत सुविधायें प्रदान करना।
5. **समानताएँ**—दोनों में सुशासन व्यवस्था पर बल दिया जाता है।
   दोनों में लोगों की भागीदारी द्वारा योजनाओं को क्रियान्वित करने पर बल देती हैं।
   असमानताएँ—नगरीय स्थानीय निकाय व्यवस्था अधिक जटिल है जबकि पंचायती राज व्यवस्था सरल है।
   नगरीय स्थानीय निकाय के प्रबन्धन में उच्च कौशल, ज्ञान, तकनीक की आवश्यकता होती है जबकि पंचायती राज में यह प्रायः कम होती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – ब, 2 – ब, 3 – ब, 4 – ब, 5 – अ, 6 – स, 7 – ?? , 8 – स, 9 – ब, 10 – अ, 11 – ब, 12 – स, 13 – स, 14 – स , 15 – ब ।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – सहभागी, 2 – मद्रास, 3 – नगरपालिका या नगर निगम 4 – इंदौर, 5 – स्थानीय शहरी निकास।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – असत्य, 4 – असत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – स, 2 – अ, 3 – य, 4 – ब, 5 – द

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (अ), 2 – (स)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – स, 2 – ब, 3 – ब

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. वे सरकारी संरचनाएँ जो शहरों और कस्बों में स्थानीय प्रशासन एवं सेवाओं का प्रबंधन करती हैं।
2. स्वच्छ सर्वेक्षण योजना के तहत भारत का सबसे स्वच्छ शहर इंदौर है।
3. ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन का मूल नाम मद्रास निगम था।
4. सामुदायिक गतिविधियाँ आयोजित करना
5. एक प्रणाली जहाँ शक्ति और निर्णय लेना स्थानीय अधिकारियों के बीच अवतरित होता है।
6. 1688
7. नगर निगम
8. शहरी क्षेत्रों में सहभागी लोकतंत्र नागरिकों को स्थानीय शासन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सीधे शामिल करके मोहल्ला समितियों, नागरिक परामर्श मंचों आदि के माध्यम से कार्य करता है।
9. छोटे कस्बों की देखभाल करना।
10. शहरों को स्वच्छता और सफाई के प्रयासों के आधार पर क्रम प्रदान करना।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. स्थानीय शहरी निकाय स्थानीय सरकारी संस्थाएँ होती हैं जो लोगों को अपने क्षेत्र के संचालन में सीधा योगदान देने की सुविधा प्रदान करती हैं।
2. वार्ड समितियाँ स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन, अभियानों (जैसे एकल - उपयोग प्लास्टिक के खिलाफ) के द्वारा स्थानीय समस्याओं के समाधान में सहायता करती है।
3. नागरिक सक्रिय रूप से भागीदारी करके, सार्वजनिक बैठकों में भाग लेकर, चिंताओं को व्यक्त करके, और नगरपालिका सेवाओं पर प्रतिक्रिया देकर शहरी स्थानीय निकायों को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।
4. स्वच्छ सर्वेक्षण योजना के तहत इंदौर को लगातार सात वर्षों से भारत में मध्य प्रदेश राज्य का सबसे स्वच्छ शहर माना गया है। यही कारण है कि उसे भारत के सबसे स्वच्छ शहर का खिताब मिला है।
5. 1996 में, मद्रास नगर निगम का नाम बदलकर ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन कर दिया गया; जिसमें आसपास के क्षेत्रों को शामिल किया गया। यह परिवर्तन शहर की बढ़ती ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किया गया था।
6. विकेंद्रीकरण, शासन सामुदायिक सशक्तिकरण और बेहतर सेवा वितरण के माध्यम से स्थानीय समुदायों को लाभ पहुँचाता है। इससे स्थानीय लोगों को निर्णय लेने में अधिक भागीदारी मिलती है।
7. बड़े शहरों में नगर निगम सार्वजनिक स्वास्थ्य, सफाई, जल आपूर्ति, सड़कें, प्रकाश व्यवस्था और शहरी नियोजन आदि सेवाऐं प्रदान करती हैं।
8. शहरी क्षेत्रों में सहभागी लोकतंत्र नागरिकों को स्थानीय शासन में और निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करता है। इसमें मोहल्ला-समितियाँ, जनसुनवाई सभा, नागरिक परामर्श मंच और ऑन लाइन प्लेटफॉर्म जैसे माध्यमों का उपयोग होता है।

I. दीर्घउत्तरीय प्रश्न —

1. भारतीय शहरों में नगर निगम : भूमिका और कार्यप्रणाली

भारतीय शहरों में नगर निगम शहरी स्थानीय स्वशासन की महत्वपूर्ण इकाई हैं, जिन्हें 74वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा संवैधानिक दर्जा मिला। इनका मुख्य कार्य शहरी क्षेत्रों का कुशल प्रशासन, विकास और नागरिकों को आवश्यक सेवाएँ प्रदान करना है।

भूमिका (Role) नगर निगम कई महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं :

- **बुनियादी सेवाएँ :** जल आपूर्ति, सीवेज, कचरा प्रबंधन, सड़क निर्माण और स्ट्रीट लाइटिंग जैसी शहरी बुनियादी सुविधाओं का रखरखाव।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य :** स्वच्छता, बीमारियों की रोकथाम और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का संचालन।
- **शहरी नियोजन :** शहरी विकास की योजना बनाना, बिल्डिंग बायलॉज लागू करना और अतिक्रमण हटाना।

- **शिक्षा :** प्राथमिक शिक्षा सुविधाओं (नगर निगम स्कूल) का प्रबंधन।
- **राजस्व सृजन :** संपत्ति कर, जल कर जैसे विभिन्न स्थानीय करों को एकत्र करना।
- **जन्म-मृत्यु पंजीकरण** और सामाजिक-सांस्कृतिक कल्याण से संबंधित कार्य।

कार्यप्रणाली (Functioning) नगर निगम लोकतांत्रिक और प्रशासनिक ढांचे के तहत कार्य करते हैं :

- **संरचना :**
  - **पार्षद :** सीधे जनता द्वारा चुने गए वार्ड प्रतिनिधि, जो मुख्य निर्णय लेने वाली संस्था होते हैं।
  - **महापौर :** निगम का प्रमुख जो बैठकों की अध्यक्षता करता है।
  - **स्थानीय समितियाँ :** विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञता के लिए बनी समितियाँ।
  - **नगर आयुक्त/कमिश्नर :** राज्य सरकार द्वारा नियुक्त वरिष्ठ IAS अधिकारी, जो निगम के प्रशासनिक प्रमुख होते हैं और निर्णयों को लागू करते हैं।
- **चुनाव और कार्यकाल :** हर पाँच साल में राज्य चुनाव आयोग द्वारा चुनाव कराए जाते हैं, और महापौर व पार्षदों का कार्यकाल पाँच साल का होता है।

2. शहरी शासन में सहभागी लोकतंत्र नागरिकों को कैसे सशक्त बनाता है?

शहरी शासन में सहभागी लोकतंत्र नागरिकों को स्थानीय निर्णय लेने और शासन प्रक्रियाओं में सीधे शामिल करके सशक्त बनाता है। यह उन्हें केवल वोट डालने से कहीं अधिक अधिकार देता है।

नागरिकों को सशक्त बनाने के मुख्य तरीके :

- **आवाज और प्रभाव :** नागरिकों को अपनी राय व्यक्त करने और स्थानीय मुद्दों पर सुझाव देने का सीध मंच मिलता है (जैसे जनसुनवाई में), जिससे उनकी बात सुनी जाती है और नीतिगत निर्णयों को प्रभावित कर सकती है।
- **जवाबदेही में वृद्धि :** नागरिक स्थानीय निकायों को अधिक जवाबदेह बना सकते हैं, क्योंकि वे परियोजनाओं की निगरानी कर सकते हैं और धन के उपयोग पर सवाल उठा सकते हैं, जिससे भ्रष्टाचार कम होता है।
- **बेहतर निर्णय :** नागरिकों के पास अपने क्षेत्र की समस्याओं की जमीनी जानकारी होती है जो अधिक प्रभावी और प्रासंगिक समाधानों की ओर ले जाती है।
- **क्षमता निर्माण :** भागीदारी से नागरिकों में नेतृत्व, समस्या-समाधान और संचार जैसे महत्वपूर्ण नागरिक कौशल विकसित होते हैं, जिससे वे अधिक जागरूक और प्रभावी बनते हैं।
- **सामुदायिक स्वामित्व :** निर्णयों में शामिल होने से नागरिकों में परियोजनाओं के प्रति स्वामित्व की भावना आती है, जिससे उनके सफल कार्यान्वयन और रखरखाव को बढ़ावा मिलता है।
- **पारदर्शिता :** सहभागी तंत्र सरकारी कामकाज में अधिक पारदर्शिता सुनिश्चित करते हैं, जिससे निर्णय सार्वजनिक होते हैं।

संक्षेप में, सहभागी लोकतंत्र नागरिकों को निष्क्रिय प्राप्तकर्ताओं से सक्रिय हितधारकों में बदलता है, जिससे वे अपने शहर के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. भारतीय शहरी स्थानीय निकाय: संरचना और विभिन्न स्तरों की भूमिका

भारतीय शहरी क्षेत्रों में शहरी स्थानीय निकाय (ULBs), जिन्हें 74वें संविधान अधिनियम, 1992 के तहत संवैधानिक दर्जा मिला है, शहरी प्रशासन की मुख्य इकाइयाँ हैं। इन्हें जनसंख्या और शहरीकरण के स्तर के आधार पर तीन मुख्य स्तरों में बांटा गया है।

सामान्य संरचना

सभी ULBs में एक लोकतांत्रिक संरचना होती है:

- **निर्वाचित पार्षद/सभासद :** सीधे वार्डों से चुने जाते हैं।
- **प्रमुख/अध्यक्ष :** निकाय का निर्वाचित मुखिया (जैसे महापौर)।
- **प्रशासनिक प्रमुख :** राज्य सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारी (जैसे नगर आयुक्त) जो निर्णयों को लागू करता है।
- **कार्यकाल :** आमतौर पर पाँच साल, राज्य चुनाव आयोग द्वारा चुनाव।

विभिन्न स्तर और उनकी भूमिकाएँ

1. **नगर निगम** (Municipal Corporation)
   - **परिभाषा :** बड़े शहरी क्षेत्रों

(आमतौर पर 10 लाख + आबादी) और महानगरों के लिए। ये सबसे बड़े और शक्तिशाली ULBs हैं।

- **संरचना :** बड़ी संख्या में पार्षद : महापौर और एक नगर आयुक्त (IAS)।
- **भूमिका :** बुनियादी ढाँचा (सड़कें, जल, सीवेज), सार्वजनिक स्वास्थ्य (सफाई कचरा), शहरी नियोजन, प्राथमिक शिक्षा और राजस्व सृजन (संपत्ति कर आदि) सहित संविधान की बारहवीं अनुसूची के 18 विषयों पर कार्य करते हैं।

2. **नगर परिषद/नगर पालिका परिषद (Municipal Council)**
   - **परिभाषा :** छोटे शहरी क्षेत्रों (आमतौर पर 1 लाख से 5 लाख आबादी) के लिए।
   - **संरचना :** पार्षद, अध्यक्ष/सभापति और एक अधिशासी अधिकारी।
   - **भूमिका :** नगर निगमों के समान बुनियादी नागरिक सुविधाएँ (पानी, स्व्च्छता, स्ट्रीट लाइट) प्रदान करते हैं, लेकिन छोटे पैमाने पर। स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा और स्थानीय बाजारों का विनियमन भी करते हैं।
3. **नगर पंचायत** (Nagar Panchayat)

   परिभाषा : ग्रामीण से शहरी में संक्रमण (transition) कर रहे क्षेत्रों (आमतौर पर 10,000 से 1 लाख आबादी) के लिए।

   संरचना : वार्ड पार्षद, अध्यक्ष/चेयरमैन और एक अधिशासी अधिकारी।

   भूमिका : पेयजल, सड़कें, सफाई, स्ट्रीट लाइटिंग जैसी बुनियादी नागरिक सुविधाएँ प्रदान करते हैं, और शहरीकरण की व्यवस्थित प्रक्रिया सुनिश्चित करते हैं।

4. नागरिकों की भूमिका और स्वच्छ सर्वेक्षण की सफलता में योगदान

स्वच्छ सर्वेक्षण, जो स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) का हिस्सा है, का लक्ष्य शहरों में स्वच्छता का आकलन करना और प्रतिस्पर्धा बढ़ाना है। इसकी सफलता के लिए नागरिकों का सक्रिय योगदान अनिवार्य है।

नागरिकों की भूमिका:

- **व्यवहार परिवर्तन :** स्वयं स्वच्छता का पालन करना (कूड़ा सही जगह डालना, खुले में शौच न करना) और कचरे को स्रोत पर अलग-अलग करना। साथ ही, दूसरों को भी गंदगी फैलाने से रोकना।
- **जागरूकता :** परिवार और पड़ोस में स्वच्छता का महत्व समझाना, स्थानीय अभियानों में सहयोग करना।
- **निगरानी और रिपोर्टिंग :** 'स्वच्छटा ऐप' जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर स्वच्छता संबंधी मुद्दों की शिकायत करना और अधिकारियों को वास्तविक स्थिति से अवगत कराना।
- **प्रतिक्रिया और मूल्यांकन :** स्वच्छ सर्वेक्षण में नागरिकों की प्रतिक्रिया एक महत्वपूर्ण घटक है, जो शहरों की रैंकिंग को सीधे प्रभावित करती है और उन्हें सुधार के लिए प्रेरित करती है।
- **सामुदायिक भागीदारी :** नागरिक समूह और RWA जैसी संस्थाएँ 'स्वच्छता प्रहरी' बनकर या 'जीरो-वेस्ट कॉलोनी' जैसे नवाचारों में सक्रिय रूप से भाग ले सकती हैं।
- **व्यवहार परिवर्तन का आधार :** नागरिकों की भागीदारी ही खुले में शौच मुक्त (ODF) स्थिति प्राप्त करने और स्वच्छता को जीवन शैली का हिस्सा बनाने के लिए आवश्यक सामूहिक चेतना पैदा करती है।
- **सटीक आकलन और प्रतिस्पर्धा :** नागरिकों की प्रतिक्रिया सर्वेक्षण को अधिक सटीक बनाती हैं, जिससे शहरों के बीच स्वच्छ्य प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।
- **प्रभावी क्रियान्वयन :** जागरूक नागरिक शहरी निकायों पर स्वच्छता सेवाओं को बेहतर ढंग से लागू करने का दबाव बनाते हैं।
- **सतत परिवर्तन :** नागरिकों की निरंतर भागीदारी और स्वामित्व की भावना ही स्वच्छता के प्रयासों को टिकाऊ बनाती है।
- **जागरूकता और शिक्षा :** नागरिकों के योगदान से स्वच्छता एक जन आंदोलन बन जाती है, जिससे अगली पीढ़ी में भी जागरूकता बढ़ती है।

संक्षेप में, स्वच्छ सर्वेक्षण जैसी योजनाएँ केवल सरकारी प्रयास नहीं हैं; वे एक सामूहिक जिम्मेदारी है। नागरिकों की सक्रिय भागीदारी और व्यवहार परिवर्तन ही भारत को स्वच्छ बनाने की कुंजी है। यह शासन में जनता की शक्ति का एक बेहतरीन उदाहरण है।

5. **चेन्नई (मद्रास) नगर निगम का विकासः**
संक्षिप्त विश्लेषण : चेन्नई नगर निगम, जो पहले मद्रास नगर निगम के नाम से जाना जाता था, भारत का सबसे पुराना नगर निगम है, जिसकी स्थापना 29 सितंबर, 1688 को हुई थी। इसका विकास भारतीय शहरी स्थानीय स्वशासन के बदलते स्वरूप का प्रतिबिंब है।
विकास के मुख्य चरण :
1. **प्रारंभिक चरण (1688-19वीं सदी) :**
   - **उद्देश्य :** मुख्य रूप से किले और आसपास की सफाई, सार्वजनिक कार्य, और कर संग्रह।
   - **सीमित अधिकार :** यूरोपीय क्षेत्रों पर केंद्रित, भारतीय क्षेत्रों की उपेक्षा। यह भारत में आधुनिक स्थानीय स्वशासन की नींव थी।
2. **20वीं सदी की शुरूआत** (1900-1947)
   - **भारतीय भागीदारी :** मोंटेग-चेम्सफोर्ड सुधारों के बाद निर्वाचित भारतीय सदस्यों की संख्या बढ़ी, जिससे स्थानीय मुद्दों पर भारतीय प्रतिनिधियों की आवाज मजबूत हुई।
   - **विकासः** सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा और जल आपूर्ति जैसी सेवाओं में सुधार।
3. **स्वतंत्रता के बाद का युग** (1947-1992):
   - **स्वायत्तता में वृद्धि :** नगर निगमों को अधिक स्वायत्तता मिली, लेकिन तीव्र शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने बुनियादी ढाँचे और सेवाओं पर भारी दबाव डाला।
   - **चुनौतियाँ :** वित्तीय बाधाएँ (राज्य सरकार पर निर्भरता) और अपर्याप्त सेवा वितरण (पानी की कमी, यातायात) प्रमुख मुद्दे बने।
4. 74**वें संशोधन के बाद** (1992-**वर्तमान**)**:**
   - **संवैधानिक दर्जा :** 74वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 ने निगमों को संवैधानिक दर्जा दिया, जिससे उनकी शक्तियाँ, कार्य और वित्त परिभाषित हुए। नियमित चुनाव और आरक्षण अनिवार्य हुए।
   - **नाम परिवर्तन :** 1996 में शहर का नाम मद्रास से चेन्नई हुआ, और निगम का नाम चेन्नई नगर निगम।

निष्कर्ष : चेन्नई निगम का विकास भारत में शहरी स्थानीय स्वशासन के विकास को दर्शाता है। यह एक सीमित औपनिवेशिक निकाय से एक जटिल, संवैधानिक रूप से सशक्त शहरी प्रशासन में बदल गया है, जो लगातार शहरी चुनौतियों और नागरिक अपेक्षाओं के साथ तालमेल बिठाने का प्रयास कर रहा है।

पाठ—13

कार्य का महत्व

NCERT प्रश्न

1.

	आर्थिक गति. विधि	गैर आर्थिक गतिविधि
1.	ये मुद्रा प्राप्त करने के लिए सम्पन्न की जाती हैं।	इनमें किसी प्रकार का आर्थिक परिलाभ जुड़ा नहीं होता है।
2.	इनका आर्थिक मूल्य होता है।	इनका नैतिक मूल्य होता है।
3.	ये मौद्रिक वृद्धि में सहायक हैं।	ये सामाजिक सांस्कृतिक, नैतिक मूल्य वृद्धि में सहायक हैं।
4.	ये स्वार्थ पर आधारित हैं।	ये निस्वार्थ की जाती हैं।

2. लोग विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों में शामिल होते हैं यथा—

प्राथमिक आर्थिक गतिविधि—कृषि, खनन, मत्स्यन, वस्तु संग्रहण, पशुपालन, शिकार आदि।

द्वितीयक आर्थिक गतिविधि— विनिर्माण, प्रसंस्करण, उद्योग आदि।

तृतीयक आर्थिक गतिविधि– परिवहन, संचार, व्यापार, डॉक्टर, शिक्षक, सेवा क्षेत्र।

चतुर्थक आर्थिक गतिविधि– बैंकिंग, अनुसंधान, नीति निर्माण आदि।

3. सामुदायिक सेवा कार्यों में लगे लोग अत्यधिक सम्माननीय होते हैं। यह कथन सही है क्योंकि इन लोगों के द्वारा किये जाने वाले कार्य बिना किसी आर्थिक लाभ की लालसा के निस्वार्थ भाव से समाज के कल्याण के लिए किये जाते हैं। इन लोगों के कार्य समुदाय/समाज में सांस्कृतिक/सामाजिक उत्थान के द्वारा नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। ये लोग दया, सद्भाव, अनुशासन, संस्कारों के उत्थान को बढ़ाते हैं। इसी कारण इन्हें समाज में सम्मानीय माना जाता है।

4. नौकरी – मासिक वेतन

   मजदूरी – दैनिक पारिश्रमिक

   कृषिगत कार्य – नकद भुगतान व वस्तु के रूप में भुगतान

   घरेलू कार्य – भोजन, वस्त्र व कुछ नकद रकम

   उच्च पेशा कार्य – वार्षिक वेतन पैकेज आदि।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – स, 2 – ब, 3 – स, 4 – अ, 5 – अ, 6 – ब, 7 – ब, 8 – स, 9 – ब, 10 – ब, 11 – ब, 12 – अ, 13 – स, 14 – ब, 15 – स ।

B. रिक्त स्थान भरें –

1 – बचत, 2 – वनोत्सव,

3 – कौशल, समय और प्रयास

4 – गैर-आर्थिक, 5 – पूजा स्थलों।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – असत्य, 4 – असत्य, 5 – सत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए –

1 – ब, 2 – य, 3 – द, 4 – अ, 5 – स

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न –

1 – (अ), 2 – (अ)

F. केस आधारित प्रश्न –

1 – ब, 2 – स, 3 – ब

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. पैसे कमाना होता है।
2. वे गतिविधियाँ जो प्रेम एवं निःस्वार्थ भाव से की जाती हैं।
3. यह एक सिस्टम है जिसमें मूल्य के स्थान पर एक वस्तु के बदले दूसरे वस्तु का आदान-प्रदान होता है।
4. वन महोत्सव का उद्देश्य सामूहिक रूप से वृक्षारोपण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना है।
5. एक सिस्टम जिसमें वस्तु के बदले वस्तु का आदान-प्रदान होता है।
6. श्रम बाजार वह जगह है जहाँ नौकरी की आपूर्ति और माँग मिलती है।
7. रमेश द्वारा फैक्ट्री में कार्य करना
8. अर्थव्यवस्था
9. सामुदायिक भागीदारी समुदायों को सशक्त बनाता है।
10. वेतन – वेतन एक निश्चित मासिक या वार्षिक राशि होती है।

    मजदूरी – मजदूरी प्रति घंटा या दैनिक दर पर आधारित होती है।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आर्थिक गतिविधियाँ : ऐसी गतिविधियाँ जो पैसे से जुड़ी होती हैं।

   गैर आर्थिक गतिविधियाँ : ऐसी गतिविधियाँ जो आय या संपत्ति से नहीं बल्कि प्रेम, देखभाल, सम्मान जैसी भावनाओं से जुड़ी होती है।
2. आर्थिक गतिविधियाँ न केवल धन उत्पन्न करती हैं, बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा करती हैं, जिससे लोगों की जीवन शैली में सुधार होता है और सामाजिक प्रगति होती है।
3. श्रम बाजार, वह जगह है, जहाँ श्रमिक अपनी सेवाओं को नियोक्ताओं को बेचते हैं, और नियोक्ता उन सेवाओं को खरीदते हैं। यह किसी भी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में बार्टर सिस्टम (वस्तु विनियम प्रणाली) के अंतर्गत लोग बिना पैसे का उपयोग किए, समुदाय के भीतर आपसी जरूरतों को पूरा करते हैं, वे वस्तुओं और सेवाओं के बदले अन्य वस्तुओं या सेवाओं का आदान-प्रदान करते हैं।
5. ग्रामीण मजदूरों के लिए वस्तु में मजदूरी का महत्व यह है कि यह उन्हें भोजन, कपड़े और अन्य आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ नकदी की कमी होती है।

I. दीर्घउत्तरीय प्रश्न —

1. **आर्थिक गतिविधियाँ : आय सृजन और सामाजिक महत्व**

आर्थिक गतिविधियाँ (वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन, वितरण और उपभोग) आय सृजन का आधार हैं और समाज के विकास व कल्याण के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं।

आय सृजन में भूमिका :

- **उत्पादन और रोजगार :** उत्पादन के लिए श्रम, पूंजी, भूमि और उद्यमिता की आवश्यकता होती है, जिनके बदले में वेतन, ब्याज, लगान और लाभ के रूप में आय मिलती है, जिससे लाखों रोजगार पैदा होते हैं।
- **विनिमय (क्रय-विक्रय) :** वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री से राजस्व प्राप्त होता है, जिससे वेतन दिए जाते हैं और लाभ कमाया जाता है।
- **निवेश :** आय का निवेश करने से पूंजी निर्माण होता है, जिससे अधिक उत्पादन और रोजगार के अवसर बनते हैं, तथा ब्याज या लाभांश के रूप में आय मिलती है।
- **मूल्य संवर्धन :** कच्चे माल को मूल्यवान उत्पादों में बदलने की प्रक्रिया में शामिल सभी लोगों को उनके योगदान के लिए आय मिलती है।
- **सरकारी राजस्व :** आर्थिक गतिविधियों पर लगने वाले कर (GST, आयकर) सरकार के लिए राजस्व जुटाते हैं, जिसका उपयोग सार्वजनिक सेवाओं पर होता है, जिससे और आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं।

समाज के लिए महत्व :

- **जीवन स्तर में सुधार :** आय बढ़ने से लोगों की क्रय शक्ति बढ़ती है, जिससे वे बेहतर भोजन, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त कर पाते हैं, जिससे जीवन स्तर सुधरता है।
- **गरीबी उन्मूलन :** रोजगार सृजन और आय वितरण से गरीबी कम होती है और वंचित वर्गों को मुख्यधारा में आने का अवसर मिलता है।
- **बुनियादी ढाँचा और सार्वजनिक सेवाएँ :** आर्थिक गतिविधियाँ सरकार को राजस्व देती हैं, जिसका उपयोग सड़कों, अस्पतालों, स्कूलों जैसी आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे के विकास में होता है।
- **नवाचार और तकनीकी प्रगति :** आर्थिक प्रतिस्पर्धा नए नवाचारों और तकनीकों को बढ़ावा देती है, जो जीवन को आसान बनाते हैं और उत्पादकता बढ़ाते हैं।

2. **मजदूरी, वेतन और वस्तु में भुगतान के बीच अंतर**

मजदूरी, वेतन और वस्तु में भुगतान, ये सभी आय प्राप्त करने के तरीके हैं, लेकिन इनमें कुछ मूलभूत अंतर होते हैं जो उनकी प्रकृति, आवृत्ति और भुगतान के रूप को परिभाषित करते हैं।

1. मजदूरी (Wages)

- **परिभाषा :** मजदूरी आमतौर पर घंटे के आधार पर, दैनिक आधार पर, या किए गए काम की मात्रा (प्रति पीस) के आधार पर दिए जाने वाले भुगतान को संदर्भित करती है।
- **अवधि :** यह अक्सर अल्पकालिक या अनियमित प्रकृति के काम के लिए होती है।
- **उदाहरण :** निर्माण मजदूर, दिहाड़ी मजदूर, फैक्ट्री में प्रति इकाई उत्पादन करने वाले श्रमिक।

2. वेतन (Salary)

- **परिभाषा :** वेतन एक कर्मचारी को उसके नियोक्ता द्वारा नियमित अंतराल पर (आमतौर पर मासिक या पाखिक) दिए जाने वाले निश्चित भुगतान को संदर्भित करता है, चाहे उसने उस अवधि में कितना भी काम किया हो। यह अक्सर एक वार्षिक पैकेज के रूप में तय किया जाता है जिसे मासिक रूप से वितरित किया जाता है।
- **अवधि :** यह अक्सर दीर्घकालिक या स्थायी रोजगार से जुड़ा होता है।
- **उदाहरण :** कार्यालय कर्मचारी, शिक्षक, डॉक्टर, मैनेजर।

3. वस्तु में भुगतान (Payment in Kind/Barter)

- **परिभाषा :** वस्तु में भुगतान का अर्थ है पैसे के बजाय सीधे वस्तुओं या सेवाओं के रूप में भुगतान करना। इसे 'गैर-मौद्रिक भुगतान' भी कहा जाता है।
- **अवधि :** यह भुगतान किसी भी अवधि के लिए हो सकता है, अक्सर विशिष्ट लेनदेन या समझौते पर निर्भर करता है।
- **उदाहरण :**
  - एक किसान का अपने खेत में काम करने वाले मजदूर को अनाज या सब्जियों के रूप में भुगतान करना।

- m एक कारीगर का अपनी सेवा के बदले में कपड़े प्राप्त करना।

3. बाजारों का वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय में योगदान

बाज़ार वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय (लेनदेन) को सुगम बनाने और उसे कुशल बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, जिससे वे आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं के लिए अपरिहार्य बन जाते हैं।

बाजारों के प्रमुख योगदानः

- **क्रेताओं और विक्रेताओं को जोड़ना :** बाजार (भौतिक या ऑनलाइन) खरीदारों और विक्रेताओं को एक साथ लाते हैं, जिससे उन्हें एक-दूसरे को खोजने में आसानी होती है और खोज की लागत कम होती है।
- **मूल्य निर्धारण (Price Discovery) :** मांग और आपूर्ति के आधार पर वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य निर्धारण करते हैं, जिससे एक निष्पक्ष और कुशल मूल्य बनता है।
- **तरलता :** बाजार वस्तुओं और सेवाओं को आसानी से पैसे में बदलने की क्षमता प्रदान करते हैं, जिसे तरलता कहते हैं।
- **विशेषज्ञता को बढ़ावा :** विनिमय आसान होने से व्यक्ति और फर्में एक या कुछ वस्तुओं/सेवाओं के उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं, जिससे उत्पादकता बढ़ती है।
- **पसंद और विविधता :** खरीदारों को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं में से चुनने का विकल्प मिलता है, जिससे उनकी संतुष्टि बढ़ती है।

संक्षेप में, बाजार वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय के लिए एक व्यवस्थित और गतिशील मंच प्रदान करते हैं, जो आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देता है।

पाठ—14

हमारे आसपास की गतिविधियाँ

NCERT प्रश्न

1. **प्राथमिक क्षेत्रक का अर्थ—** ऐसी गतिविधियों का क्षेत्र जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति जन्य दशाओं पर निर्भर करते हैं, उन्हें प्राथमिक गतिविधि/क्षेत्र कहा जाता है।

   द्वितीयक क्षेत्र से अन्तर—

   (i) प्राथमिक क्षेत्र प्रकृति पर निर्भर है जबकि द्वितीयक क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भर है।

   (ii) प्राथमिक क्षेत्र की वस्तु कम मूल्यवान होती है, जिन्हें द्वितीयक क्षेत्र के कार्य अधिक गुणवत्तापूर्ण व अधिक मूल्यवान बनाते हैं।

2. द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण, प्रसंस्करण व विनियोजन शामिल होता है। जो औद्योगिक कार्यों का आधार है। इन कार्यों के लिए तृतीयक क्षेत्र पर निर्भर है। यथा उद्योगों में कच्चे माल को लाने व तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने में परिवहन के साधन महत्त्वपूर्ण हैं।

   उद्योगों के विकास में संचार के साधनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वस्तुओं के क्रय-विक्रय अर्थात व्यापारिक कार्यों के बिना द्वितीयक क्षेत्र का कोई महत्त्व नहीं है।

   सेवा क्षेत्र द्वितीयक क्षेत्र के कार्यों के लिए आधार स्तम्भ है।

3. प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्र एक दूसरे पर परस्पर निर्भर हैं। इनके बीच आपसी संयोजन की दशा देखने को मिलती है। यथा— कृषि जो एक प्राथमिक कार्य है, उससे प्राप्त उत्पाद उद्योगों (द्वितीयक क्षेत्र) को कच्ची सामग्री प्रदान करते हैं। इन उद्योगों में तैयार उत्पाद यथा उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, मशीनें कृषि हेतु आवश्यक होती हैं जो कृषि उत्पादन को बढ़ाते हैं। उद्योगों में कच्ची सामग्री को लाने व तैयार माल को ले जाने में परिवहन, अहम भूमिका निभाता है। इस परिवहन के साधनों का निर्माण उद्योगों से प्राप्त उत्पादों से होता है। कृषि से प्राप्त उपजों का व्यापार किया जाता है तथा व्यापार किसानों व कृषि क्षेत्र के विकास में सहायता करता है।

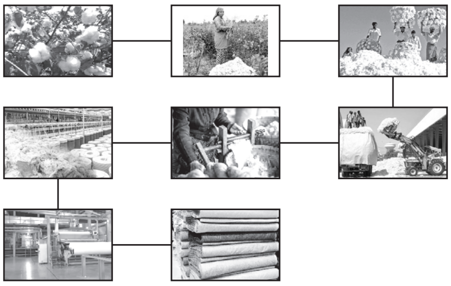

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

A. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 – ब, 2 – स, 3 – स, 4 – स, 5 – ब, 6 – स, 7 – ब , 8 – स, 9 – ब, 10 – अ, 11 – ब, 12 – स, 13 – स, 14 – ब , 15 – अ ।

B. रिक्त स्थान भरें —

1 – प्राथमिक, 2 – द्वितीयक, 3 – तृतीयक

4 – सेवा क्षेत्र, 5 – सहकारी कंपनी।

C. सत्य/असत्य

1 – असत्य, 2 – सत्य, 3 – असत्य, 4 – सत्य, 5 – असत्य।

D. निम्न को सुमेलित कीजिए —

1 – द, 2 – य, 3 – अ, 4 – स, 5 – ब

E. कथन-कारण आधारित प्रश्न —

1 – (द), 2 – (अ)

F. केस आधारित प्रश्न —

1 – ब, 2 – ब, 3 – द

G. अति लघु उत्तरीय प्रश्न —

1. प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियाँ वे होती हैं, जिनमें लोग सामान सीधे प्रकृति से प्राप्त करते हैं। जैसे- कृषि, मत्स्यपालन, खनन।
2. खेतों से प्राप्त अनाज को आटे में बदलना।
3. सामान के परिवहन एवं व्यापार में सहायता करती है।
4. अमूल का मुख्य उद्देश्य मध्यस्थों को खत्म करके किसानों को सशक्त बनाना है।
5. किसी उत्पाद के मूल्य को बढ़ाने की प्रक्रिया, उसके रूपांतरण, गुणवत्ता में सुधार करके।
6. ऐसी गतिविधियाँ जो प्राथमिक क्षेत्र से कच्चे माल को संसाधित कर उत्पादों का निर्माण करती है, जैसे निर्माण और विनिर्माण कार्य।
7. एक प्रक्रिया जिसके द्वारा दूध को एक निश्चित तापमान पर गर्म किया जाता है ताकि हानिकारक बैक्टीरिया को समाप्त किया जा सके।
8. पशुपालक किसान
9. तृतीय
10. तृतीयक क्षेत्र सेवाओं का उत्पादन करता है, और प्रौद्योगिकी इन सेवाओं को अधिक कुशल, सुलभ और प्रभावी बनाने में मदद करती है।

H. लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियाँ सीधे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करती है। द्वितीयक क्षेत्र की गतिविधियाँ कच्चे माल को प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त कर तैयार वस्तुओं में परिवर्तित करती है।
2. द्वितीयक क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त कच्चे माल को संसाधित करके, उनका मूल्यवर्धन करता है और उन्हें औद्योगिक वस्तुओं में बदल देता है।
3. तृतीयक क्षेत्र में परिवहन की भूमिका महत्वपूर्ण है। परिवहन प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों से कच्चे माल और तैयार उत्पादों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करता है।
4. यह मॉडल किसानों को सीधे सहकारी समिति के माध्यम से दूध बेचने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे बिचौलियों को हटाकर उचित मूल्य सुनिश्चित होता है।
5. प्राथमिक क्षेत्र में सामान को प्रकृति से प्राप्त किया जाता है एवं द्वितीयक क्षेत्र में इस कच्चे माल को उत्पादों में बदला जाता है तथा तृतीयक क्षेत्र इन उत्पादों के परिवहन में सहायता करता है इस प्रकार तीनों क्षेत्र आपस में निर्भर है।
6. अमूल ने किसानों को सशक्त बनाकर, रोजगार पैदा करके और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करके ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
7. सहकारी संगठन किसानों को एकजुट करके, उन्हें बेहतर बाजार पहुँच, वित्तीय सहायता, और तकनीकी ज्ञान प्रदान करती हैं, जिससे उनकी आय और जीवन स्तर में सुधार होता है।
8. तृतीयक क्षेत्र में व्यापार वस्तुओं और सेवाओं को उत्पादकों से उपभोक्ताओं तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह रोजगार सृजन, बाजार संतुलन और आर्थिक विकास में योगदान देता है साथ ही उपभोक्ताओं की सुविधा और विकल्प प्रदान करता है।

I. दीर्घउत्तरीय प्रश्न —

1. **प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों की गतिविधियाँ और उनका अंतर्संबंध**

अर्थव्यवस्था को आमतौर पर तीन मुख्य क्षेत्रों में बाँटा जाता है: प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक। ये तीनों क्षेत्र आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं, जिससे

एक एकीकृत आर्थिक चक्र बनता है।

1. **प्राथमिक से द्वितीयक :**
   - प्राथमिक क्षेत्र द्वितीयक क्षेत्र के लिए कच्चा माल प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, कृषि से कपास प्राप्त होता है जिसका उपयोग कपड़ा उद्योगों (द्वितीयक) में होता है, या खनन से लौह अयस्क स्टीम उद्योगों (द्वितीयक) में जाता है।
   - द्वितीयक क्षेत्र को चलाने के लिए प्राथमिक क्षेत्र के उत्पाद अनिवार्य हैं।
2. **द्वितीयक से प्राथमिक और तृतीयक :**
   - द्वितीयक क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र के लिए उपकरण और मशीनरी (जैसे ट्रैक्टर, उर्वरक, खनन उपकरण) का उत्पादन करता है।
   - द्वितीयक क्षेत्र द्वारा उत्पादित तैयार वस्तुओं को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए तृतीयक क्षेत्र की सेवाओं (परिवहन, खुदरा बिक्री, बैंकिंग) की आवश्यकता होती है।
3. **तृतीयक से प्राथमिक और तृतीयक :**
   - तृतीयक क्षेत्र प्राथमिक और द्वितीयक दोनों क्षेत्रों को आवश्यक सेवाएँ प्रदान करता है।
   - परिवहन (उत्पादों को बाजार तक ले जाना), संचार (बाजार की जानकारी देना), बैंकिंग (ऋण प्रदान करना), शिक्षा (कुशल श्रम तैयार करना) और स्वास्थ्य सेवाएँ (श्रमिकों को स्वस्थ रखना) - ये सभी सेवाएँ तीनों क्षेत्रों के सुचारू संचालन के लिए महत्वपूर्ण हैं।
   - उदाहरण के लिए, एक किसान (प्राथमिक) को अपने उत्पादों को बाजार तक ले जाने के लिए परिवहन (तृतीयक) की आवश्यकता होती है, और एक फैक्ट्री (द्वितीयक) को अपनी मशीनरी खरीदने के लिए बैंक ऋण (तृतीयक) की आवश्यकता होती है।

2. अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्र मिलकर तैयार माल कैसे बनाते हैं?

अर्थव्यवस्था के प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र अलग-अलग होते हुए भी आपस में गहराई से जुड़े हैं। ये मिलकर ही किसी भी तैयार माल का उत्पादन, वितरण और उपभोग सुनिश्चित करते हैं, जैसे कि चीनी के उत्पादन में होता है।

तीनों क्षेत्रों का समन्वय :

1. **प्राथमिक क्षेत्र (कच्चा माल):** यह कृषि, खनन आदि से कच्चा माल प्रदान करता है।
   - उदाहरण: किसान गन्ने की खेती करते हैं, जो चीनी बनाने का मूल कच्चा माल है। प्राथमिक क्षेत्र के बिना आगे का उत्पादन संभव नहीं।
2. **द्वितीयक क्षेत्र (प्रसंस्करण) : यह प्राथमिक क्षेत्र के कच्चे माल को लेकर उसे मूल्यवान तैयार उत्पाद में बदलता है।**
   - उदाहरण : चीनी मिलें गन्ने से चीनी बनाती हैं। इस प्रक्रिया में मशीनरी और श्रम का उपयोग होता है, जिससे कच्चे माल का रूप बदल जाता है।
3. **तृतीयक क्षेत्र (सेवाएँ और वितरण) :** यह सीधे कोई वस्तु नहीं बनाता, बल्कि अन्य दोनों क्षेत्रों को सेवाएँ प्रदान करता है और तैयार माल को उपभोक्ता तक पहुँचाता है।
   - उदाहरण: परिवहन (गन्ना/चीनी ढोने के लिए), भंडारण (चीनी सुरक्षित रखने के लिए), बैंकिंग (वित्तीय सहायता के लिए), व्यापार/खुदरा बिक्री (चीनी उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए), और संचार (जानकारी के आदान-प्रदान के लिए) जैसी सेवाएँ इस क्षेत्र में आती हैं। तृतीयक क्षेत्र के बिना कच्चा माल प्रसंस्करण तक नहीं पहुँच पाएगा और तैयार माल बाजार तक नहीं।

3. आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में सेवा क्षेत्र का महत्व

सेवा क्षेत्र (Tertiary Sector), जिसे सेवा क्षेत्र भी कहते हैं, आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं की रीढ़ है। यह सीधे वस्तुएँ न बनाकर अमूर्त सेवाएँ प्रदान करता है, जो आर्थिक विकास, रोजगार और जीवन स्तर सुधारने में अहम हैं।

महत्व के मुख्य बिंदु:

- **GDP में सबसे बड़ा योगदान :** अधिकांश विकसित और कई विकासशील देशों में, सेवा क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का

सबसे बड़ा हिस्सा है (जैसे भारत में 50% से अधिक)

- **रोजगार का प्रमुख स्रोत :** यह विभिन्न कौशल स्तरों के लिए विशाल रोजगार के अवसर पैदा करता है, जिसमें (IT विशेषज्ञ, डॉक्टर, शिक्षक और खुदरा विक्रेता शामिल हैं।
- **अन्य क्षेत्रों को समर्थन : परिवहन, बैंकिंग, संचार, शिक्षा और स्वास्थ्य** जैसी सेवाएँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों के कुशल संचालन के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा प्रदान करती हैं।
- **जीवन स्तर में सुधार :** बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अन्य उपभोक्ता सेवाएँ सीधे तौर पर लोगों के जीवन की गुणवत्ता बढ़ाती हैं।
- **ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था का चालक :** IT, सॉफ्टवेयर विकास और परामर्श जैसी सेवाएँ नवाचार और नई प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देती हैं।
- **वैश्वीकरण को बढ़ावा :** सेवाएँ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक बड़ा हिस्सा बन गई हैं, जिससे देशों के बीच आर्थिक संबंध बढ़ते हैं।
- **लचीलापन और नवाचार :** यह क्षेत्र विनिर्माण की तुलना में अधिक लचीला होता है और ई-कॉमर्स, फिनटेक जैसे नए नवाचारों को तेजी से अपनाता है।

4. सहकारी मॉडल : अन्य उद्योगों में आर्थिक विकास के लिए एक शक्ति

सहकारी मॉडल एक सदस्य-स्वामित्व वाली व्यावसायिक संरचना है जो लाभ के बजाय आपसी लाभ और साझा उद्देश्यों पर केंद्रित है, जैसा कि कृषि (जैसे अमूल) में सफल रहा है। यह लोकतांत्रिक नियंत्रण और न्यायसंगत भागीदारी पर आधारित है।

यह मॉडल अन्य उद्योगों में आर्थिक विकास की कई तरह से बढ़ावा दे सकता है :

- **छोटे व्यवसायों को सशक्त बनाना :** खुदरा, हस्तशिल्प और छोटे विनिर्माण में संयुक्त खरीद, विपणन और ऋण पहुँच प्रदान करके।
- **उपभोक्ता-केंद्रित सेवाएँ :** स्वास्थ्य, शिक्षा और बैंकिंग में सदस्यों की जरूरतों पर केंद्रित सस्ती और गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करके।
- **नवाचार और कौशल विकास :** IT और डिज़ाइन जैसे क्षेत्रों में संसाधन और ज्ञान साझा करके।
- **सामुदायिक विकास :** पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा में स्थानीय रोजगार और धन को बनाए रखकर।
- **संसाधन दक्षता और वित्तीय समावेशन** में भी योगदान देता है।

यह मॉडल समावेशी और सतत आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है, जो अधिक न्यायसंगत और लचीली अर्थव्यवस्था का निर्माण कर सकता है।

5. अमूल जैसी सहकारी समितियों का ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने में महत्व

अमूल जैसी सहकारी समितियाँ ग्रामीण समुदायों को कई तरह से सशक्त बनाने में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है :

- **आर्थिक सशक्तिकरण :** ये छोटे किसानों और उत्पादकों को बिचौलियों से बचाती हैं और उनके उत्पादों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करती हैं। वे उन्हें बड़े बाज़ारों तक पहुँच प्रदान करती है, जिससे उनकी आय बढ़ती है और गरीबी कम होती है।
- **सामूहिक शक्ति और मोलभाव की क्षमता :** व्यक्तिगत रूप से कमजोर किसान, सहकारी समिति का हिस्सा बनकर, संयुक्त रूप से बेहतर मोलभाव कर पाते हैं, चाहे वह कच्चे माल की खरीद हो या उत्पादों की बिक्री।
- **ज्ञान और कौशल विकास :** सहकारी समितियाँ अक्सर सदस्यों को बेहतर उत्पादन तकनीकें, पशुधन प्रबंधन और गुणवत्ता नियंत्रण का प्रशिक्षण देती हैं, जिससे उनकी उत्पादकता बढ़ती है।
- **लोकतांत्रिक भागीदारी :** 'एक सदस्य, एक वोट' का सिद्धांत सदस्यों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होने का अधिकार देता है, जिससे उनमें स्वामित्व और आत्मविश्वास की भावना आती है।
- **बुनियादी सुविधाओं का विकास :** सहकारी समितियाँ अक्सर अपने लाभ का कुछ हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सामुदायिक सुविधाओं के विकास में लगाती हैं।